Every Fortnight

April I 2014

मूल्य ♦ दस रुपए

# बालहंस

- क्रेजी किया रे
- अप्रेल फूल शायरी
- जानवर भी करते हैं बातें
- नॉलेज बैंक
- मूर्ख दिवस का इतिहास
- मसखरा चार्ली चैप्लिन
- ये विदूषक
- लाफिंग बुद्धा

राजस्थान पत्रिका प्रकाशन

वर्ष- 28 अंक- 18

1-15 अप्रेल, 2014 पृष्ठ- 68

# खोयी हुई चाबी

–वेणु वारियथ

वर्ष- 28 अंक-18

अप्रेल (प्रथम) 2014, जयपुर

## कहानियां

स्पन्दन या छोटा भीम- 8-9
सत्कर्म का फल- 10-11
अप्रेल फूल- 12-13

## चित्रकथा

मजाक का चखा मजा- 15-17
दिखाई सच्चाई- 21-23
ई-मैन- 62-65

## प्रतियोगिताएं

प्रतियोगिता परिणाम- 58
ज्ञान प्रतियोगिता- 59
रंग दे प्रतियोगिता- 60

## विविध

मूर्ख दिवस का इतिहास- 5
हास्य लघु कथाएं- 6-7
सीख-सुहानी- 14
हमारे भगवान की सर्विस...- 20
मसखरा चार्ली चैप्लिन- 24
किससे अकबर-बीरबल के- 25
कभी हंसाते, कभी रुलाते, कभी बहलाते, ये विदूषक- 26-27
लाफिंग बुद्धा- 28
मूर्ख दिवस की मूर्खतापूर्ण कथाएं- 29
बालहंस न्यूज़- 30-31
सैर-सपाटा-32-33
अप्रेल फूल शायरी- 34-35
क्रेजी किया रे- 36-37
बोलें अंग्रेजी- 39
गुदगुदी- 40-41
सामान्य ज्ञान- 42-43
तथ्य निराले- 44-45
क्यों और कैसे/कमाल है- 46
क्रॉसवर्ड पजल्स- 47
आर्ट जंक्शन- 50-51
होली विदेशों में भी- 48
नॉलेज बैंक- 49
ठिकाना तो बताना/ ग्राफ से चित्र/ अंतर बताओ- 52-53
किड्स क्लब- 54-55
क्या जानवर भी करते हैं आपस में बातें?- 56-57
ढूंढो तो...- 61
कैसा लगा- 66

संपादक
आनन्द प्रकाश जोशी

उप संपादक
मनीष कुमार चौधरी

संपादकीय सहयोग
किशन शर्मा

चित्रांकन
प्रतिमा सिंह

पृष्ठ सज्जा: शेरसिंह

फोटो एडिटिंग: संदीप शर्मा

## ग्राहक शुल्क

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से **बालहंस, जयपुर** के नाम भिजवाएं।
वार्षिक- 240/-रुपए,
अर्द्धवार्षिक- 120/-रुपए

## संपादकीय सम्पर्क

**बालहंस (पाक्षिक)**
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान) पिन-302 004
दूरभाष: 0141-3005857
e-mail: balhans@epatrika.com

सब्सक्रिप्शन एवं वितरण संबंधी जानकारी के लिए 0141-3005825 पर संपर्क करें।

**हास्य जीवन का प्रभात है, शीतकाल की मधुर धूप है, तो ग्रीष्म की तपती दुपहरी में सघन छाया। इससे आप तो आनंद पाते ही हैं, दूसरों को भी आनंदित करते हैं।**

## संपादकीय

दोस्तो,

कहते हैं हंसी भीतर आनंद का बाहरी चिह्न है। जो दिल से हंसता है, वह कभी बुरा नहीं होता। हंसी हर दर्द की दवा होती है। हंसी से बड़ा कोई इलाज नहीं होता। आज की भागती-दौड़ती जिंदगी में हंसी कहीं खो-सी गई है। लेकिन इस व्यस्त जिंदगी में भी लोग जीने के कुछ पल किसी ना किसी बहाने ढूंढ़ ही लेते हैं। कुछ लोग लाफ्टर क्लब जॉइन करते हैं तो कुछ हिन्दी चुटकुलों को पढ़, सुन और हास्य कार्यक्रम देख अपनी हंसी को खोज ही लेते हैं। अपने मित्र को हंसाओ, वह अधिक प्रसन्न होगा। शत्रु को हंसाओ, तुमसे कम से कम घृणा करेगा। एक अनजान को हंसाओ, तुम पर भरोसा करेगा। उदास को हंसाओ, उसका दुख घटेगा। एक बालक को हंसाओ, वह प्रसन्न और प्यारा बालक बनेगा। हंसी सबको भली लगती है। जो हंसता है, वह आयु बढ़ाता है। यूं तो आज हमें हंसने के पल बेहद कम मिलते हैं, लेकिन इन सबके बावजूद एक दिन ऐसा है जो लोगों को हंसने-गुदगुदाने का मौका देता है और यह है एक अप्रेल यानि मूर्ख दिवस का दिन। अप्रेल फूल बनाने के पीछे यही हास्य-व्यंग्य का भाव छिपा है। किसी की मजाक बनाने का यह अर्थ नहीं है कि उससे दुश्मनी निकाली जा रही है। यह सिर्फ एक स्वस्थ मनोरंजन भर होता है। हां, जान-बूझकर अप्रेल फूल के नाम पर किसी से वैर निकाला जा रहा है तो यह अवश्य ही गलत है। अप्रेल माह को ध्यान रखते हुए हमने इस बार थोड़ी हास्य-रस से भरी सामग्री प्रस्तुत करने की कोशिश की है। दोस्तो, हम भले ही आपको अप्रेल फूल बनाएं या न बनाएं, हंसाने का प्रयास तो करेंगे ही।

तुम्हारा बालहंस

# मूर्ख दिवस का इतिहास

**मूर्ख** दिवस का इतिहास का बहुत ही पुराना है। इस संदर्भ में पहला स□बन्ध चॉसर के कैंटरबरी टेल्स (वर्ष क्प्-ख) में पाया जाता है। ब्रिटिश लेखक चॉसर की किताब 'द कैंटरबरी टेल्स' में कैंटरबरी नाम के एक कस्बे का जिक्र है। इसमें इंग्लैण्ड के राजा रिचर्ड द्वितीय और बोहेमिया की रानी एनी की सगाई की तारीख फ्ख मार्च, क्फ्त्क को होने की घोषणा होती है, जिसे कस्बे के लोग सही मानकर मूर्ख बन जाते हैं। तभी से एक अप्रेल को मूर्ख दिवस मनाया जाता है।

हालांकि बहुत से लोगों का मानना है कि मूर्ख दिवस की शुरुआत क्त्रवीं सदी से हुई। इस मजेदार दिन की शुरुआत की कहानी भी बड़ी मनोरंजक है। वर्ष क्भ्ब से पहले यूरोप के लगभग सभी देशों में एक जैसा कैलेंडर प्रचलित था, जिसमें हर नया वर्ष पहली अप्रेल से शुरू होता था। उन दिनों पहली अप्रेल के दिन को लोग नववर्ष के प्रथम दिन की तरह ठीक इसी प्रकार मनाते थे, जैसे आज हम पहली जनवरी को मनाते हैं।

इस दिन लोग एक-दूसरे से मिलकर बधाइयां देते थे और वह सब काम करते थे जो हम नए साल के दिन करते हैं। सन क्भ्ब में वहां के राजा चार्ल्स नवम ने एक बेहतर कैलेंडर को अपनाने का आदेश दिया। इस नए कैलेंडर में आज की तरह क जनवरी को वर्ष का प्रथम दिन माना गया था। अधिकतर लोगों ने इस नए कैलेंडर को अपना लिया।

लेकिन कुछ ऐसे भी लोग थे, जिन्होंने नए कैलेंडर को अपनाने से इंकार कर दिया था। वह पहली जनवरी को वर्ष का नया दिन न मानकर पहली अप्रेल को ही वर्ष का पहला दिन मानते थे। ऐसे लोगों को मूर्ख समझकर नया कैलेंडर अपनाने वालों ने पहली अप्रेल के दिन विचित्र प्रकार के मजाक करने और झूठे उपहार देने शुरू कर दिए

# हास्य

**एक** बार कक्षा छह में चार बालकों को परीक्षा में समान अंक मिले। अब प्रश्न खड़ा हुआ कि किसे प्रथम रैंक दिया जाये। स्कूल प्रबन्धन ने तय किया कि प्रिंसिपल चारों से एक सवाल पूछेंगे। जो बच्चा उसका सबसे सटीक जवाब देगा उसे प्रथम घोषित किया जायेगा।

चारों बच्चे हाजिर हुए। प्रिंसिपल ने सवाल पूछा- 'दुनिया में सबसे तेज क्या होता है?'

पहले बच्चे ने कहा, मुझे लगता है, 'विचार' सबसे तेज होता है, क्योंकि दिमाग में कोई भी विचार तेजी से आता है, इससे तेज कोई नहीं। प्रिंसिपल ने कहा, 'ठीक है, बिल्कुल सही जवाब है।'

दूसरे बच्चे ने कहा, मुझे लगता है, 'पलक झपकना' सबसे तेज होता है, हमें पता भी नहीं चलता और पलकें झपक जाती हैं और अक्सर कहा जाता है, पलक झपकते कार्य हो गया। प्रिंसिपल बोले, 'बहुत खूब, बच्चे दिमाग लगा रहे हैं।'

तीसरे बच्चे ने कहा, 'बिजली,' क्योंकि मेरे यहां गैरेज, जो कि सौ फीट दूर है, में जब बत्ती जलानी होती है, हम घर में एक बटन दबाते हैं, और तत्काल वहां रोशनी हो जाती है, तो मुझे लगता है बिजली सबसे तेज होती है...।

अब बारी आई चौथे बच्चे की। सभी लोग ध्यान से सुन रहे थे, क्योंकि लगभग सभी 'तेज' बातों का उल्लेख तीनों बच्चे पहले ही कर चुके थे। चौथे बच्चे ने कहा, सबसे तेज होता है 'डायरिया...।'

सभी चौंके...प्रिंसिपल ने कहा, 'साबित करो कैसे? बच्चा बोला, कल मुझे डायरिया हो गया था, रात के दो बजे की बात है, जब तक कि मैं कुछ 'विचार' कर पाता, या 'पलक झपकाता' या कि 'बिजली' का स्विच दबाता, डायरिया अपना 'काम' कर चुका था। कहने की जरूरत नहीं कि इस असाधारण सोच वाले बालक को ही प्रथम घोषित किया गया।

**एक** बार एक कुत्ता जंगल में रास्ता खो गया। तभी उसने देखा कि एक शेर उसकी तरफ आ रहा है। कुत्ते की सांस रुक गयी।

'आज तो काम तमाम मेरा!'

फिर उसने सामने कुछ सूखी हड्डियां पड़ी देखीं। वो आते हुए शेर की तरफ पीठ कर के बैठ गया और एक सूखी हड्डी को चूसने लगा और जोर-जोर से बोलने लगा, 'वाह! शेर को खाने का तो मजा ही कुछ और है....'

'एक और मिल जाए तो पूरी दावत हो जाएगी!'

और उसने जोर से डकार मारी..

इस बार शेर सोच में पढ़ गया, उसने सोचा, 'ये कुत्ता तो शेर का शिकार करता है! जान बचा कर भागो!'

पेड़ पर बैठा एक बंदर यह सब तमाशा देख रहा था। उसने सोचा, यह मौका अच्छा है। शेर को सारी कहानी बता देता हूं।

# लघु कथाएं

**दो** भाई थे। एक की उम्र 8 साल, दूसरे की 10 साल। दोनों बड़े ही शरारती थे। उनकी शैतानियों से पूरा मोहल्ला तंग आया हुआ था। माता-पिता रात-दिन इसी चिन्ता में डूबे रहते कि आज पता नहीं वे दोनों क्या करें।

एक दिन गांव में एक साधु आया। लोगों का कहना था कि बड़े ही पहुंचे हुए महात्मा हैं, जिसको आशीर्वाद दे दें उसका कल्याण हो जाये। पड़ोसन ने बच्चों की मां को सलाह दी कि तुम अपने बच्चों को इन साधु के पास ले जाओ। शायद उनके आशीर्वाद से उनकी बुद्धि कुछ ठीक हो जाये। मां को पड़ोसन की बात ठीक लगी। पड़ोसन ने यह भी कहा कि दोनों को एक साथ मत ले जाना, नहीं तो क्या पता दोनों मिलकर वहीं कुछ शरारत कर दें और साधु नाराज हो जाये।

अगले ही दिन मां छोटे बच्चे को लेकर साधु के पास पहुंची। साधु ने बच्चे को अपने सामने बैठा लिया और मां से बाहर जाकर इंतजार करने को कहा। साधु ने बच्चे से पूछा, 'बेटे, तुम भगवान को जानते हो न? बताओ, भगवान कहां हैं?'

बच्चा कुछ नहीं बोला। बस टुकर-टुकर साधु की ओर देखता रहा। साधु ने फिर अपना प्रश्न दोहराया। पर बच्चा फिर भी कुछ नहीं बोला। अब साधु को कुछ चिढ़-सी आई। उसने थोड़ी नाराजगी प्रकट करते हुये कहा, 'मैं क्या पूछ रहा हूं, तुम्हें सुनाई नहीं देता। जवाब दो, भगवान कहां हैं?' बच्चे ने कोई जवाब नहीं दिया। बस साधु की ओर हैरतभरी नजरों से देखता रहा। अचानक जैसे बच्चे की चेतना लौटी। वह उठा और तेजी से बाहर की ओर भागा। साधु ने आवाज दी, पर वह रुका नहीं। सीधा घर जाकर अपने कमरे में पलंग के नीचे छुप गया। बड़ा भाई, जो घर पर ही था, ने उसे छुपते हुये देखा तो पूछा, 'क्या हुआ? छुप क्यों रहे हो?'

'भैया, तुम भी जल्दी से कहीं छुप जाओ।' बच्चे ने घबराये हुये स्वर में कहा।

'पर हुआ क्या?' बड़े भाई ने भी पलंग के नीचे घुसने की कोशिश करते हुये पूछा।

'अब की बार हम बहुत बड़ी मुसीबत में फंस गये हैं। भगवान कहीं गुम हो गया है और लोग समझ रहे हैं कि इसमें हमारा हाथ है!'

इससे शेर से दोस्ती हो जाएगी और जिंदगीभर के लिए जान का खतरा दूर हो जाएगा!

वो फटाफट शेर के पीछे भागा। कुत्ते ने बंदर को जाते हुए देख लिया !

उधर बंदर ने शेर को सब बता दिया कि कैसे कुत्ते ने उसे बेवकूफ बनाया है।

शेर ने जोर से कहा, 'चल मेरे साथ अभी उसकी लीला खत्म करता हूं,' और बंदर को अपनी पीठ पर बैठा कर शेर कुत्ते की तरफ लपका!

कुत्ते ने शेर को आते देखा तो एक बार फिर उसकी तरफ पीठ करके बैठ गया और जोर-जोर से बोलने लगा, 'इस बंदर को भेजे हुए एक घंटा हो गया, साला एक शेर फंसा कर नहीं ला सका.....!'

ये सुनते ही आप समझ सकते हो कि शेर किस स्पीड से बन्दर को नीचे पटक कर डर के मारे वापस भागा होगा....।

# स्पन्दन या छोटा भीम

कहानी

आज स्पन्दन बहुत खुश था। उसके पापा-म□मी उसे पा□लक पार्क जो ले जा रहे थे। वहां बहुत सारे झूले हैं। गोल चकरी, फिसलन पटटी और सी-सा भी। हां, एक टॉय ट्रेन भी है जो पूरे पार्क का च□कर लगाती है । उसमें बैठ कर घूमना स्पन्दन को खूब अच्छा लगता है।

पापा ने मोटरसाइकिल निकाली। स्पन्दन फुदक कर गेट से बाहर आ गया। म□मी पीछे उस भीमकाय गेट को बन्द करने की कोशिश करने लगी। पहले उसे ठेलने में जोर लगाया। कपाट पास में आए तो पर अच्छी तरह जुड़े ही नहीं। म□मी ने जोर लगाया तो नीचे की दो सिटकनियां आगे-पीछे हुईं। कपाट बराबर मिल गए। म□मी ने काली सुनहरे पेंट की हुई चकरीनुमा मूठ को घुमाया और गेट बन्द हो गया।

पापा मोटरसाइकिल किक लगा कर स्टार्ट कर चुके थे। स्पन्दन आगे बैठ चुका था। म□मी भी बैठ गई। मोटरसाइकिल हवा से बातें कर रही थी और स्पन्दन पापा से।

'पापा! मैं भीम वाला खिलौना लूंगा।'

'हां, जरूर लेंगे।' पापा हैलमेट के शीशे को सरका कर बोले थे ।

'पापा मैं भी छोटा भीम हूं...,' नन्हा स्पन्दन पार्क में जाने की खुशी से चहक रहा था।

'ये छोटे भीम ने तो बच्चों को बिगाड़ रखा है...,' इस बार म□मी पापा के कान के पास आकर बोली।

'स्पन्दन को अच्छा लगता है तो हम □या करें... ?' पापा ने बेवजह जोर से होर्न बजाया।

हवा का रुख सामने से पीछे होने के कारण स्पन्दन की बातें पापा को सुनाई दे रही थीं, पर म□मी की बातें स्पन्दन को सुनाई नहीं दे रही थी। वरना वो हमेशा की तरह कह देता मैं आपका बेटा नहीं हूं, मैं तो पापा का बेटा हूं।

लो पा□लक पार्क आ गया। पापा ने मोटरसाइकिल पार्किंग में खड़ी की। स्पन्दन भाग कर उस गोल-चकरी गेट से घूम कर अन्दर गया। म□मी ने टॉय ट्रेन की टिकट लेकर पर्स में रख ली। स्पन्दन ने बारी-बारी से झूले लिए। पहले गोल चकरी, फिर फिसलन पट्टी फिर सी-सा। पूरे पार्क में एक बार म□मी के साथ पकड़म-पकड़ाई खेल कर वो बाल-स्टेशन की तरफ बढ़े, जहां टॉय-ट्रेन उनका इंतजार कर रही थी। टॉय-ट्रेन में खिड़की वाली सीट स्पन्दन की पसन्द रही है। म□मी-पापा के साथ टॉय ट्रेन में बैठ कर स्पन्दन ने टॉय ट्रेन का लुत्फ उठाया। स्टेशन पर उतरे तो बर्फ का गोला खाया। चुस्कियां लेते हुए स्पन्दन मोटरसाइकिल पर बैठा तो सामने छोटे भीम का फूला हुआ गु□बारेनुमा खिलौना दिख गया। स्पन्दन मचल कर मोटरसाइकिल से उतर कर खिलौने वाले की तरफ बढ़ गया ।

'ये स्पन्दन भी ना.... हर चीज लेगा,' म□मी झल्लाई ।

'नहीं तो □या, मैं लूंगा ये खिलौना...।'

'लेने दो ना...' पापा ने हंस कर कहा ।

स्पन्दन खिलौना लेकर उछल पड़ा, 'मैं भी छोटा भीम हूं।'

घर पहुंचे। म□मी मोटरसाइकिल से उतरी। गेट की मूठ घुमाई। गेट ठेला। पर ये □या..... ? गेट तो खुला ही नहीं। पापा ने स्पन्दन को मोटरसाइकिल से उतारा। उसने भी नन्हें हाथों से गेट को ठेला, पर सब बेकार रहा। पापा मोटरसाइकिल को स्टैण्ड पर लगा कर गेट तक आए। गेट को जोर से ध□का दिया, पर गेट नहीं खुला। ओहो.....यह तो अन्दर से बन्द हो गया है....पापा सोच में पड़कर बोले।

'अरे

'इसकी दोनों सिटकनियां नीचे फर्श में बने छेद में सरक गई हैं। अब □या करें।' म□मी अपनी गलती महसूस कर रही थी, □योंकि म□मी ने ही जाते समय गेट को जोर से बन्द किया था। तब सिटकनियां हिल-हिल कर नीचे आ गई और जमीन में बने छेद में धंस गई थीं। रात के दस बजे थे। पड़ोस के मनदीप अंकल के घर भी ताला लगा हुआ था। पापा इतनी ऊंची दीवार कैसे कूदें? म□मी ने चप्पल यूं उतारी, मानो दीवार से कूदने की तैयारी कर रही हों।

तब नन्हें स्पन्दन पर पापा का ध्यान गया। नन्हीं काया और फुर्तीला शरीर जल्दी दीवार कूद पाएगा। पापा ने उसे गोद में लिया और रेलिंग के पार जाने को कहा। स्पन्दन पहले तो झिझका, फिर पापा ने उसे कान में धीरे से कहा, 'अरे! तू तो भीम है...।'

स्पन्दन ने फुर्ती से अपना एक पैर रेलिंग के दूसरी तरफ डाल दिया । पापा ने कहा, '.....तू चिंता मत कर, मैंने तुझे पकड़ा हुआ है....' और स्पन्दन ने दूसरा पैर भी रेलिंग के दूसरी तरफ डाल दिया ।

पापा ने रेलिंग के बीच हाथ डाल कर स्पन्दन को दीवार से नीचे सरकाना शुरू किया। पहले कमर से पकड़ा, फिर कन्धों से....फिर पकड़ ढीली करते हुए छोड़ दिया।

'ध□म....' की आवाज के साथ स्पन्दन दूसरी तरफ कूद चुका था। स्पन्दन भाग कर दरवाजे की तरफ भागा और बोला, 'कैसे खोलूं पापा मुझे बताओ...।'

म□मी गेट के पास बैठ गई। अपना हाथ गेट के नीचे से डाल कर

सिटकनी को छुआ, '...तू इसे घुमा कर ऊपर कर स्पन्दन....।'

'...हां ऐसे ही....' पापा बोले।

'हां, खींचो...ऊपर ऐसे ही,' म□मी बोली ।

सूं...सां....सट ....सटाक.....और गेट खुल गया।

स्पन्दन ने म□मी-पापा का स्वागत करते हुए कहा, 'लो मैंने खोल दिया गेट....मैं छोटा भीम हूं ना....।'

म□मी के हाथ में छोटा भीम वाला खिलौना था, वो स्पन्दन की ओर बढ़ा दिया।'

– संगीता सेठी

# सत्कर्म का फल

कोई सौ सवा सौ साल पहले की बात है। स्काटलेंड मूल का गरीब किसान □लेमिंग अपने खेत में कुदाली से निनाण कर रहा था। निनाण अर्थात् गेहूं की फसल के बीच उग आई फिजूल की घास वनस्पति को हटा रहा था, ताकि फसल अच्छी पनप सके।

इतने में □लेमिंग के खलिहान के पास बने गोबरकुंड की तरफ से 'बचाओ-बचाओ...' की आवाजें आयीं। □लेमिंग उसी समय अपनी कुदाली फेंक उस पुकार की दिशा में दौड़ा। वहां पहुंच उसने देखा कि उसके गोबरकुंड में कमर तक डूबा एक लड़का अपने को बचाने की कातर पुकार कर रहा था। उसका एक हमउम्र साथी भी गोबरकुंड के बाहर खड़ा सहायता के लिए चिल्ला रहा था। उसकी हि□मत नहीं हो रही थी कि वह अपने साथी को खींच कर बाहर निकाल सके।

उस कुंड में करीब आठ फुट गहराई तक गाय-भैंसों का पतला गोबर भरा था। □लेमिंग ने तुरंत उस लड़के का हाथ पकड़ कर उसे गोबरकुंड से बाहर निकाल लिया। यदि थोड़ी देर और हो जाती तो वह लड़का गोबर की दलदल में धंस कर एक दर्दनाक मौत मर जाता।

वह किसी संभ्रांत परिवार का लड़का था। छाती तक गोबर, मिट्टी से सना हुआ। घबराहट के मारे वह अभी तक कांप रहा था। उसके साथी ने □लेमिंग को बतलाया कि वह लड़का किनारे खड़े पेड़ से फल तोड़ने की कोशिश में गोबरकुंड में गिर पड़ा था।

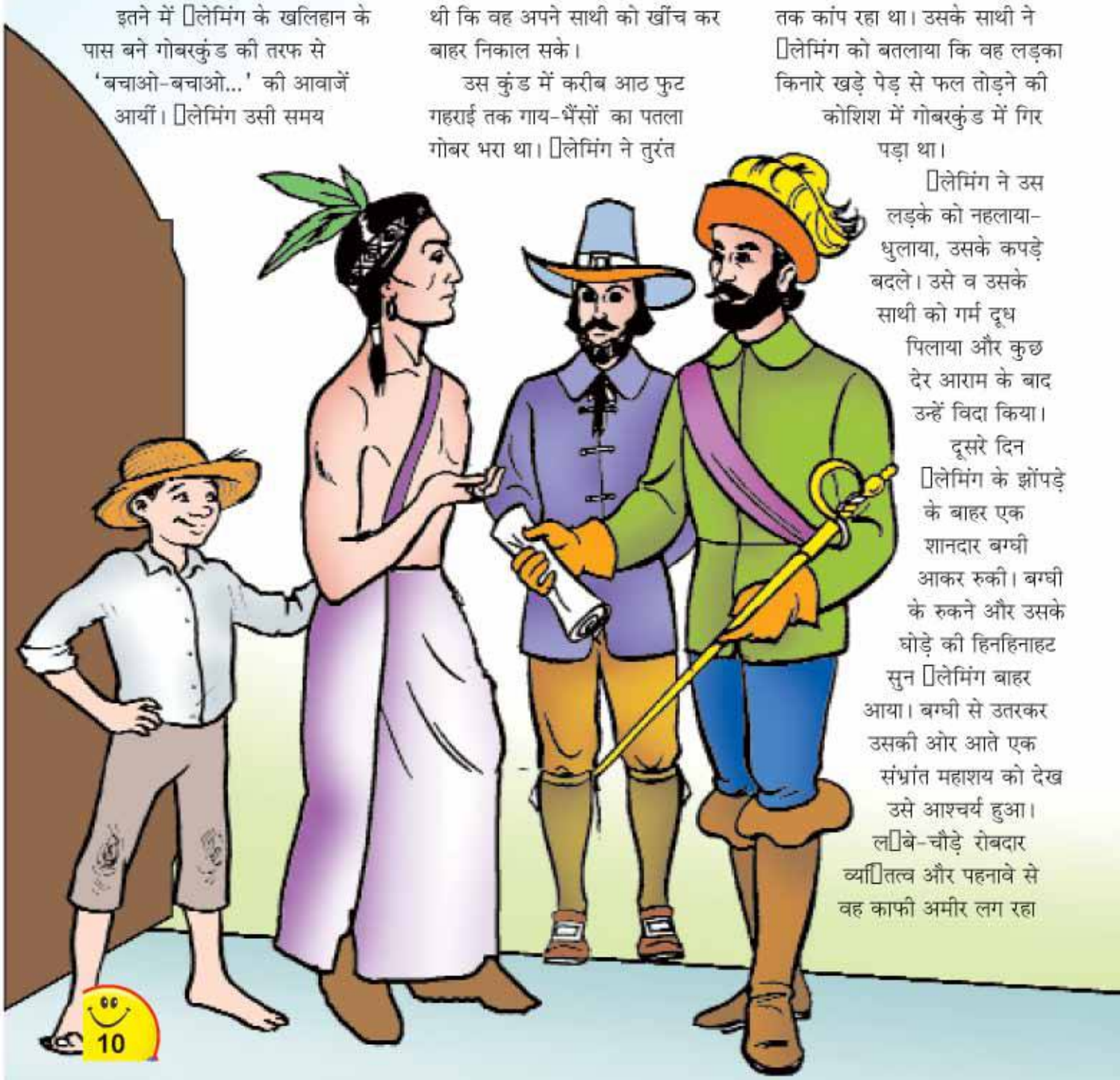

□लेमिंग ने उस लड़के को नहलाया-धुलाया, उसके कपड़े बदले। उसे व उसके साथी को गर्म दूध पिलाया और कुछ देर आराम के बाद उन्हें विदा किया।

दूसरे दिन □लेमिंग के झोंपड़े के बाहर एक शानदार बग्घी आकर रुकी। बग्घी के रुकने और उसके घोड़े की हिनहिनाहट सुन □लेमिंग बाहर आया। बग्घी से उतरकर उसकी ओर आते एक संभ्रांत महाशय को देख उसे आश्चर्य हुआ। ल□बे-चौड़े रोबदार व्य□तत्व और पहनावे से वह काफी अमीर लग रहा

'हेलो, आप ही मिस्टर □लेमिंग हैं,' महाशय ने पूछा।

'जी हां,' □लेमिंग अभी भी चकित था।

'तो आपने ही कल मेरे बेटे की जान बचाई थी।' महाशय ने विनम्रतापूर्वक पूछा।

'ओह! कोई खास बात नहीं है, श्रीमान। कृपया आप बैठिये,' □लेमिंग स□मान के साथ अपनी सबसे अच्छी कुर्सी की ओर इशारा करते हुए बोला।

'खास बात नहीं? आप नहीं जानते आपने मुझ पर कितना बड़ा उपकार किया है। मैं नहीं जानता कि इस एहसान का बदला कैसे चुका सकता हूं।' वह अत्यन्त कृतज्ञ भाव से बोला।

'यह तो मेरा फर्ज था। उपकार और एहसान कैसा?' □लेमिंग ने कहा।

'यह आपका बड़प्पन है। लेकिन आप बुरा न मानें तो मैं आपके लिए कुछ लाया हूं। कृपया इसे स्वीकार करें,' यह कहते हुए उस महाशय ने एक भारी लिफाफा, जिसमें दस हजार डॉलर रखे हुए थे, □लेमिंग की तरफ बढ़ाया।

'नहीं-नहीं, कतई नहीं। मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता,' इस बार □लेमिंग की विनम्रता में दृढ़ता भी थी।

बातों ही बातों में □लेमिंग को पता लग गया कि महाशय एक इज्जतदार खानदानी रईस है। इतने में □लेमिंग का बेटा जो खेत पर गया हुआ था, वहां आया। वह कोई नौ-दस वर्ष की उम्र का होगा।

'□या यह आपका बेटा है?' महाशय ने उस लड़के के सुन्दर-तेजस्वी चेहरे की ओर देखते हुए पूछा।

'जी हां,' □लेमिंग बोला।

'तो फिर आपको मेरी एक

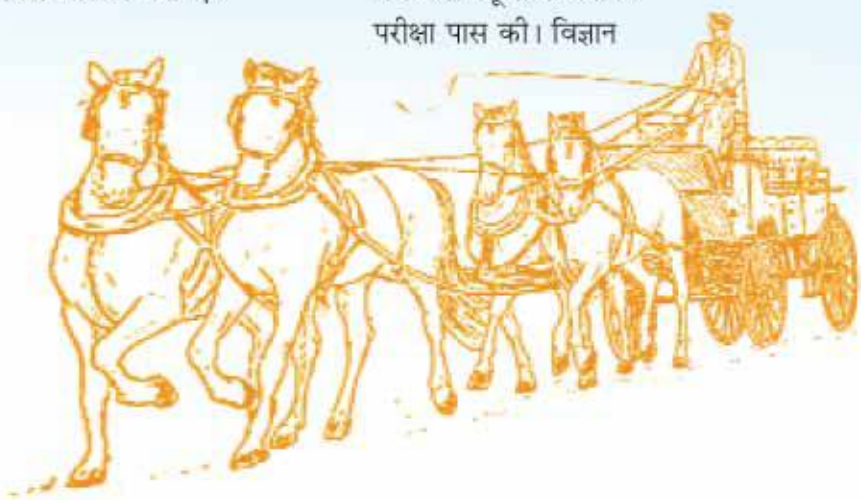

प्रार्थना स्वीकार करनी ही पड़ेगी,' महाशय ने कुछ सोच कर कहा।

'वह □या...,' □लेमिंग और उसका लड़का महाशय की ओर देखने लगे।

'मैं आपके बेटे को मेरे बेटे जैसी ही उच्च शिक्षा दिलाना चाहता हूं, कृपया अब इसके लिए ना मत कहना,' महाशय यह कह कर □लेमिंग के बेटे के सिर पर प्यार से हाथ फेरने लगे।

□लेमिंग के लिए निर्णय लेने की बड़ी कठिन घड़ी थी। कभी बेटे के मोह तो कभी उसके भविष्य पर वह कुछ विचार करने लगा। सोच-विचार कर □लेमिंग ने महाशय के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। उसने अपने बेटे को गले लगाया। उसका माथा चूमा और महाशय को सुपुर्द कर दिया।

□लेमिंग के बेटे में अपने पिता के संस्कार तो थे ही। वह पढ़ाई में भी होशियार और मेहनती था। महाशय ने उसे न केवल सर्वश्रेष्ठ स्कूल में शिक्षा दिलाई, बल्कि अच्छा लालन-पालन भी किया। महाशय की बदौलत ही आगे जाकर उस लड़के ने लंदन के सेंट मेरी हॉस्पीटल मेडिकल स्कूल से स्नातक परीक्षा पास की। विज्ञान के अध्ययन में आगे उसकी प्रतिभा निखरती ही गई।

मालूम है बच्चो, वह कौन था। वह लड़का ही आगे जाकर विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक, सर अले□जेंडर □लेमिंग कहलाया, जिसने पेनिसिलीन जैसी क्रांतिकारी एंटीबायटिक दवा का आविष्कार किया।

संयोग की बात यह भी है कि एक दिन महाशय का पुत्र, जिसे गोबरकुंड से बचाया गया था, को निमोनिया हो गया। उसका इलाज इसी पेनिसिलीन दवा से हुआ और वह ठीक हो गया।

अब इससे भी अधिक आश्चर्य तु□हें यह जानकर होगा कि वे महाशय और उनका बेटा कौन थे। तो सुनिए, उन महाशय का नाम था- लॉर्ड रेडोल्फ चर्चिल और गोबरकुंड में गिर कर बचने वाला उनका बेटा था विन्स्टन चर्चिल, जो द्वितीय विश्वयुद्ध के समय विश्व के महान राजनीतिज्ञ और इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री के रूप में प्रसिद्ध हुए।

कहते हैं कि अच्छा काम करने से आत्मिक शांति तो मिलती ही है, पूरे ब्रह्माण्ड की सकारात्मक ऊर्जा

# अप्रेल फूल

टी और उसके साथियों की शरारतों ने बूढ़ी बिन्नी के नाक में दम कर रखा था। एक दिन, दोपहर के समय डाकिया भीमा ने बिन्नी के घर का द्वार खटखटाया। खट-खट की आवाज सुनकर बिन्नी मन ही मन झल्ला गई, 'जरूर बंटी और उसके साथी होंगे। आज इनको छोड़ूंगी नहीं।

दबे कदमों से बिन्नी दरवाजे तक पहुंची और दरवाजा खोलते ही अपनी पूरी ताकत से उसने एक थप्पड़ भीमा के मुंह पर जमा दिया। भीमा चिल्लाया, अरे, मैं कोई चोर या बदमाश नहीं, डाकिया हूं।

'माफ करना भाई, इन शरारती लड़कों ने तो मुझे बुरी तरह परेशान कर रखा है। बंटी के धोखे में मैं तुहें मार बैठी।' बिन्नी ने गिड़गिड़ाकर कहा।

'यह लो अपनी चिट्ठी। हां, आगे से ऐसा मत करना।' भीमा ने गुस्से से कहा और अपने मुंह पर हाथ फेरता हुआ आगे बढ़ गया।

पास में ही एक पेड़ पर आराम से बैठे बंटी और उसके साथी यह सारा नजारा देख रहे थे। उन्हें हंसी आ गई। बंटी ने अपने पास बैठे छोटू से कहा, 'दोस्त, जाकर देखना तो, किसकी चिट्ठी आई है।' छोटू ने तुरंत पेड़ से नीचे छलांग लगाई। फिर धीरे से बिन्नी के पास जाकर खड़ा हो गया। छोटू बोला, 'दादी, मैं पढ़ दूं आपकी चिट्ठी?'

'हां बेटा, तुम ही पढ़कर सुना दो। चश्मे के बिना मुझसे पढ़ा नहीं जाता।' बिन्नी ने छोटू के हाथ में पत्र थमाते हुए कहा।

छोटू ने पत्र पढ़ना शुरू कर दिया।

'पूज्य नानीजी, सादर प्रणाम। मुझे आपकी बहुत याद आती है। आपको देखे कई वर्ष हो गए। आपको यह जानकर खुशी होगी कि मैं एक अप्रेल के दिन आपके पास पहुंच रहा हूं। आपको तो मालूम ही है कि मुझे मिठाई बहुत पसंद है, अतः आप मेरे लिए मूंग के लड्डू बनाकर तैयार रखना। आपका नाती, टिंगू।'

छोटू ने पूरा पत्र इतने जोर से पढ़ा कि पेड़ पर बैठे उसके साथी भी सुन लें। पत्र सुनकर बिन्नी खुशी-खुशी भीतर चली गई। छोटू वापस पेड़ पर अपने

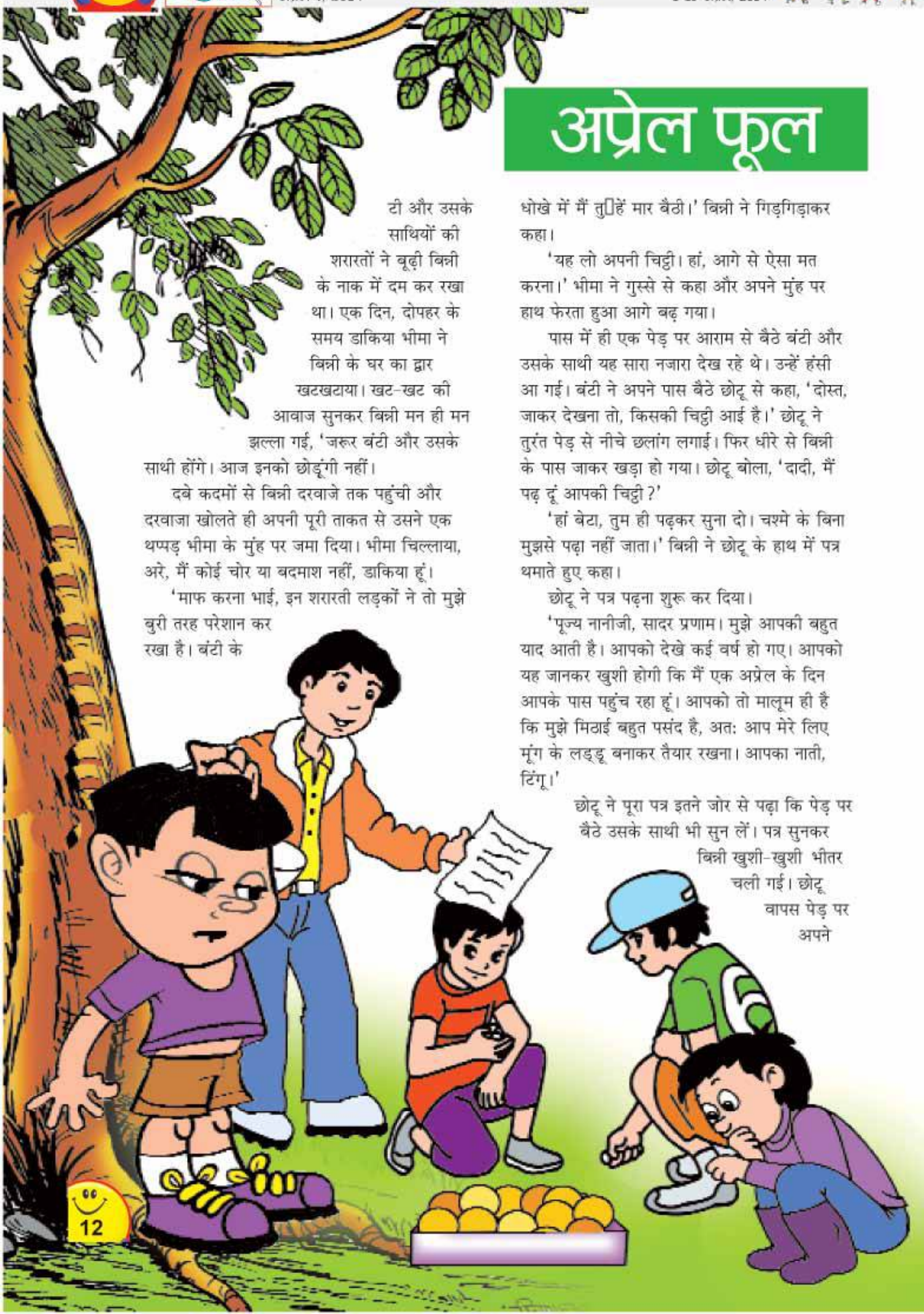

'मेरे दिमाग में एक बढ़िया तरकीब आई है।' बंटी ने अपनी आदत के अनुसार सिर खुजाते हुए कहा, '□यों न मैं टिंगू बनकर बिन्नी के यहां पहुंचूं। बिन्नी 'अप्रेल फूल' भी बन जाएगी और मुझे भरपेट लड्डू खाने को मिलेंगे।'

'तरकीब तो तु□हारी अच्छी है। अपने नाती टिंगू को उसने वर्षों से देखा भी नहीं है, इसलिए आसानी से धोखा खा जाएगी।' एक साथी ने कहा।

इस तरह बंटी और उसके साथियों ने बिन्नी को 'अप्रेल फूल' बनाने की योजना बना डाली। पहली अप्रेल के दिन सभी साथियों ने मिलकर बंटी का भेष बदल दिया। हाथ में एक थैला लेकर बंटी बिन्नी के घर के सामने आकर खड़ा हो गया। उसके साथी आसपास छिप गए। बंटी ने आवाज बदलते हुए थके स्वर में कहा, 'नानी...नानी... मैं आपका टिंगू आया हूं। दरवाजा खोलिए।'

बिन्नी तुरंत दौड़ी आई। झटपट दरवाजा खोलकर बोली, 'आ गया टिंगू। मैं सुबह से ही तेरी राह देख रही हूं। घर ढूंढने में तुझे परेशानी तो नहीं हुई?'

'नहीं, नानी... आपके घर के बाहर जो बच्चे खेल रहे हैं न, उन्होंने ही मुझे बता दिया था।' बंटी ने सिर खुजाते हुए कहा।

'अरे, उन बदमाशों ने। उन सबने मुझे तंग कर रखा है। कभी दरवाजा खटखटाते हैं, तो कभी.....अच्छा, तू जल्दी से नहा-धो ले....मैं तेरे लिए नाश्ता लाती हूं,' बिन्नी बोली।

बाहर बंटी के दोस्त राह देख रहे थे कि कब बंटी लड्डू लेकर आए। इतने में किसी ने आकर उनसे पूछा, 'मेरी नानी बिन्नी का मकान कौन सा है?'

सभी समझ गए कि यही टिंगू है। उनमें से एक आगे बढ़कर बोला, 'तु□हारी नानी का मकान जरा दूर है। तुम ऐसा करो, अपनी नाक की सीध में चले जाओ। आगे चलकर तु□हें पीपल का एक पेड़ दिखाई देगा। बस वहीं पर बिन्नी का घर है।'

बेचारा भोला-भाला टिंगू नाक की सीध में आगे बढ़ गया। छोटू ने हंसते हुए कहा, 'देखा, कैसे मूर्ख बनाया। नानी का घर ढूंढता-ढूंढता परेशान हो जाएगा। बस अब बंटी आ जाए तो मुंह मीठा कर लें।' और तभी बंटी उछलता-कूदता आ गया। उसके हाथ में एक ब□सा था।

कहानी

पास आकर बड़े गर्व से बोला, 'मजा आ गया। आज जमकर बिन्नी को मूर्ख बनाया। मैं लड्डू उठाकर लाने की फिराक में ही था कि उसने अपने-आप ही मुझे यह लड्डू का ब□सा दिया और कहा कि यह मिठाई बंटी और उसके दोस्तों को दे आओ। वैसे बिन्नी है बहुत अच्छी।'

'अब ज्यादा मत बोलो। मेरे मुंह में तो पानी आ रहा है। जल्दी से ब□सा खोलो,' छोटू ने कहा।

बंटी ने ब□सा खोला तो ब□से की मिठाई देखकर सबके चेहरों का रंग उड़ गया। ब□से में लड्डू तो थे, पर मूंग के नहीं, मिट्टी के थे। साथ में एक कागज भी था, जिस पर बिन्नी ने लिखा था, 'कहो कैसी रही? बन गए न तुम सब पहली अप्रेल के मूर्ख। बंटी, तुमने अपना भेष बदल लिया, आवाज बदलने में भी तुम सफल रहे, लेकिन बार-बार सिर खुजलाने की आदत को नहीं छोड़ पाए। बस, यहीं तुम मात खा गए और मैं पहचान गई कि तुम बंटी हो। अब यदि तुम सब शरारत न करने का वादा करो, तो मेरे घर आ जाओ और लड्डुओं का मजा लो।'

यह पढ़कर बंटी और उसके साथी एक-दूसरे की श□ल देखने लगे। तभी टिंगू भटकता हुआ वहां आ

# सबका हित देखो

**एक** राजा था। वह बड़ा सनकी था। उसे यदि किसी व्यक्ति पर गुस्सा आता, तो उसे रातभर बर्फ जैसे ठंडे पानी में खड़े होने की सजा दे देता। एक दिन उसे किसी बात पर अपने महामंत्री अरुणेश पर गुस्सा आ गया। उसने अरुणेश को रातभर ठंडे पानी में खड़े होने की सजा दे दी।

अरुणेश बहुत बुद्धिमान था। वह सोच रहा था कि राजा के दंड से किस तरह छुटकारा मिले और उसे सबक भी सिखाया जा सके। तभी उसके दिमाग में एक विचार आया। जब रात में राजा ने अरुणेश को दंड देने के लिए बुलाया, तो वह खुशी से ठंडे पानी में जाने लगा। यह देखकर राजा को आश्चर्य हुआ। उसने अरुणेश से पूछा कि क्या तुम्हें डर नहीं लग रहा? तब उसने राजा से कहा कि इसमें डर कैसा? यह तो मेरे लिए बहुत फायदेमंद है। राजा ने आश्चर्य से पूछा, 'कैसे?' उसने कहा, 'मैंने एक वैद्यजी से सुना था कि जो ज्यादा गुस्सा करता है, उसे जल्दी बुढ़ापा आ जाता है। इसका एकमात्र इलाज रातभर बर्फ जैसे ठंडे पानी में खड़े रहना है।'

राजा सोचने लगा कि गुस्सा तो मैं भी बहुत करता हूं। इसका मतलब मुझे भी बुढ़ापा जल्दी आएगा। राजा ने कहा कि आज मैं पानी में खड़ा होऊंगा। यह कहकर राजा ठंडे पानी में खड़ा हो गया। जब थोड़ा समय बीता, तो राजा को ठंड लगने लगी, पर जवानी पाने के लालच में वह खड़ा रहा। वह सोचने लगा कि रातभर ठंडे पानी में खड़े होकर कोई कैसे बुढ़ापा दूर कर सकता है? इससे व्यक्ति बीमार पड़ सकता है। यहां तक कि उसकी मौत भी हो सकती है।

तभी उसे एहसास हुआ कि उसके अजब-गजब आदेश से लोग कितना परेशान होते होंगे! शायद उसे उसकी गलती का एहसास दिलाने के लिए ही अरुणेश ने उससे ऐसा कहा। अब राजा अपनी गलती पर बहुत पछताने लगा। उसने तुरंत अरुणेश को बुलाकर माफी मांगी।

सीख सुहानी

# परोपकार

**सर्दी** का मौसम था। एक राजा अपने महल की खिड़की से बाहर का दृश्य देख रहा था। शाम ढलने को थी। तभी एक साधु आया और महल के सामने एक पेड़ के नीचे बैठ गया। उसके बदन पर एक लंगोटी को छोड़कर और कोई कपड़ा नहीं था। राजा को उस पर दया आ गई। राजा ने तुरंत एक नौकर के हाथ कुछ गरम कपड़े साधु के पास भेज दिए।

थोड़ी देर बाद राजा ने फिर बाहर झांका। उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। साधु अब भी नंगे बदन बैठा था। राजा ने सोचा, साधु को अपने तप का घमंड है, इसलिए उसने कपड़ों का तिरस्कार किया। राजा को क्रोध आया पर उसने नियंत्रण रखा। तभी अंधेरा घिर आया। राजा ने खिड़की बंद कर दी। थोड़ी देर बाद वह सो गया। सुबह राजा घूमने निकला तो ठिठक गया। नंगे बदन साधु अब भी पेड़ के नीचे मौजूद था।

राजा ने पूछा, 'कहिए, रात कैसी कटी?' साधु बोला, 'कुछ आप जैसी कटी और कुछ आप से अच्छी कटी। यह सुनकर राजा बोला, 'महाराज! आप की बात मेरी समझ में नहीं आयी।

साधु बोला, 'आपने समझा होगा कि मैंने आपकी भेंट का अपमान किया, पर ऐसी बात नहीं थी। एक गरीब आदमी सर्दी से कांपता हुआ जा रहा था। वे कपड़े मैंने उसे दे दिए। परहित में जो सुख है, उसके आगे सर्दी का क्या भय! जब तक मैं जागता रहा, भगवान का भजन करता रहा। आपको उस समय भी दुनियाभर की चिंताएं घेरे हुए थीं। इसलिए मेरा वह समय आप से अच्छा कटा। जब हम दोनों सो रहे थे, हम दोनों बराबर थे। राजा लज्जित होकर वापस लौट गया।

*सीख– परहित और परोपकार से बढ़कर कोई पुण्य नहीं है।*

भीखू

# मजाक का चखा मजा

कॉन्सेप्ट- उन्नी
ड्रॉइंग- सिमि मुहम्मा

कितना मूर्ख है! उसने मुझ से इसका कारण भी नहीं पूछा।
लेकिन तुमने उसको दो खरगोश देने का वादा क्यों किया?
हा... हा... हा...
खरगोश? मैं उसे दो लात मारूंगा!
क्या!

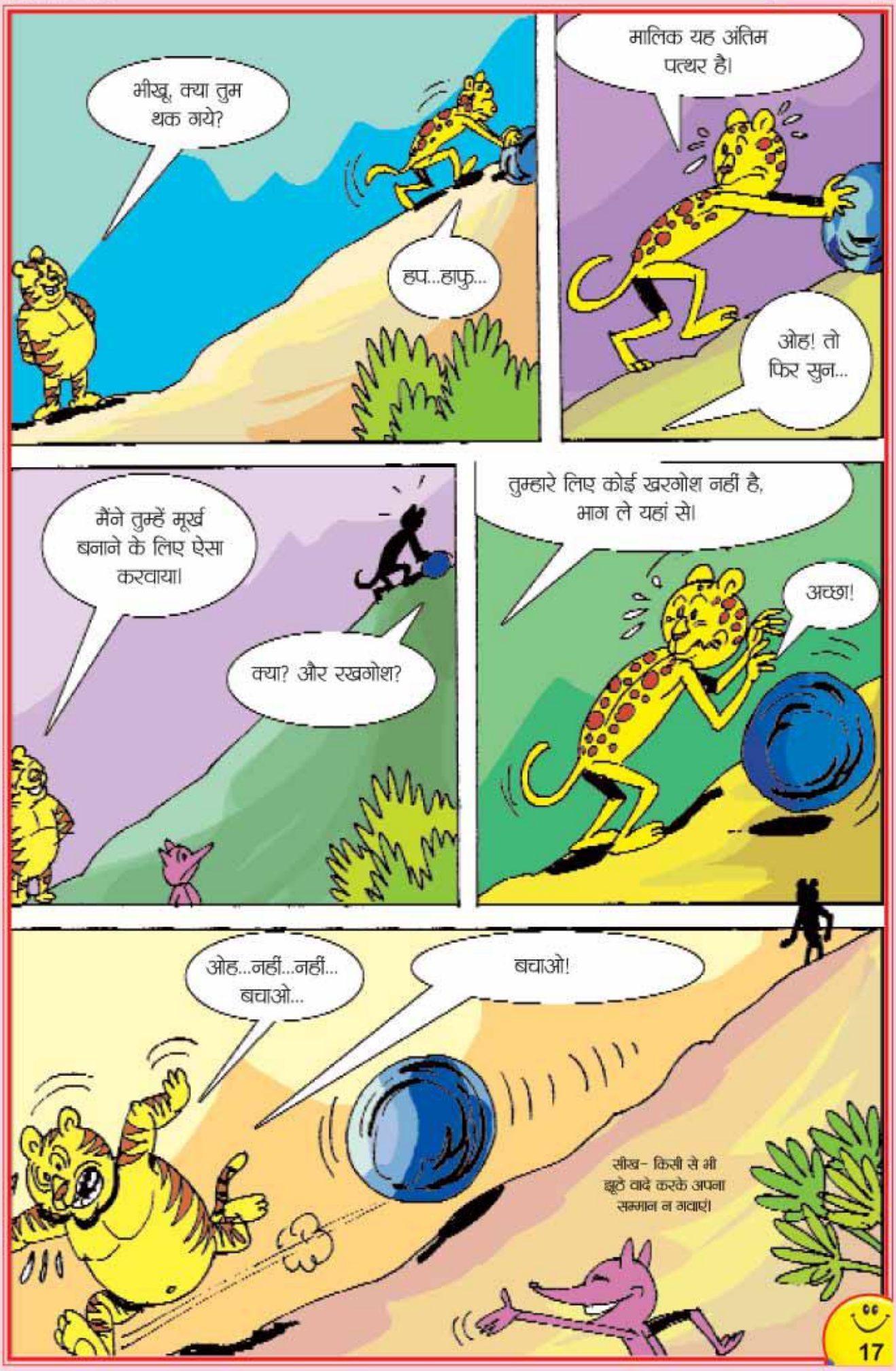
भीखू, क्या तुम थक गये?
हप...हाफु...
मालिक यह अंतिम पत्थर है।
ओह! तो फिर सुन...
मैंने तुम्हें मूर्ख बनाने के लिए ऐसा करवाया।
क्या? और रखगोश?
तुम्हारे लिए कोई खरगोश नहीं है, भाग ले यहां से।
अच्छा!
ओह...नहीं...नहीं... बचाओ...
बचाओ!
सीख- किसी से भी झूठे वादे करके अपना सम्मान न गवाएं।

# माथापच्ची

## नंबर wheel

### कैसे खेलें

नंबर व्हील को हल करने के लिए अपनी तर्क शक्ति का प्रयोग करें। यहां एक संख्या शृंखला दी गई है जो एक ही सिद्धांत के आधार पर क्रमबद्ध बढ़ती है। आपको उस शृंखला की लापता संख्या लिखनी है।

## नंबर pyramid

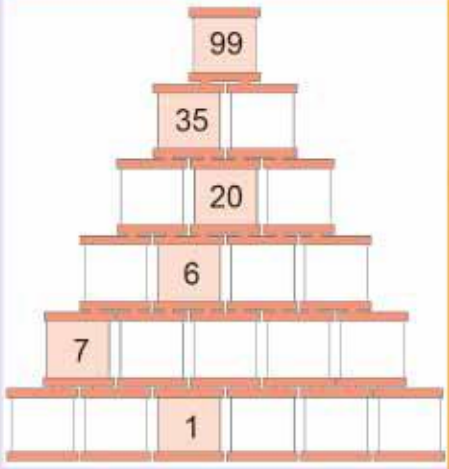


### कैसे खेलें

नंबर पिरामिड बनाने के लिए प्रत्येक दो वर्गों की संख्या का योग उन दोनों वर्गों के ठीक ऊपर के वर्ग की संख्या से मेल खाना चाहिए।

## 180-degree

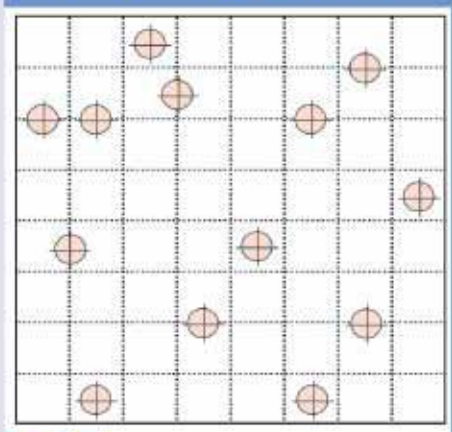

### कैसे खेलें

पहेली को हल करने के लिए आप को ऐसी विभिन्न आकृतियां बनानी हैं जो गोलों के केंद्र बिंदु ऊपर से नीचे व दाएं से बाएं देखने पर एक जैसी ही नजर आएं। ध्यान यह रखना है कि गोले का एक ही बार प्रयोग हो व आकृतियां प्रत्येक वर्ग में भर जाएं।

## उत्तर

### नंबर wheel

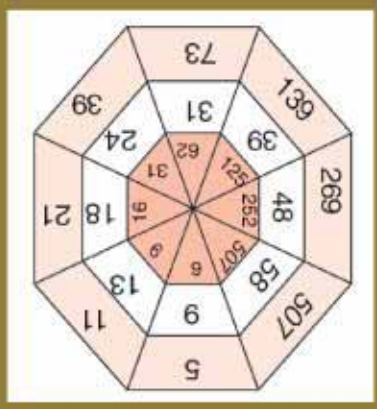


### नंबर pyramid

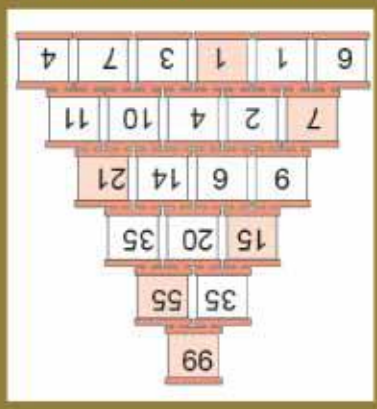


### 180-degree

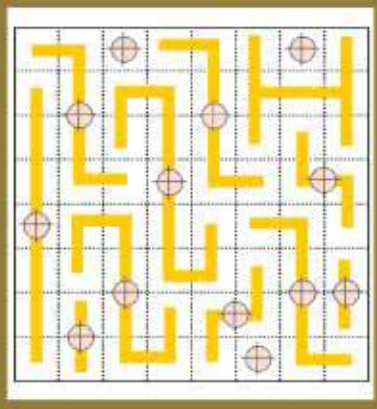

## बूझो तो...!

1. बचपन तो होता है हरा-भरा
और बुढ़ापा है पीला।
सारे फलों का राजा है यह
सचमुच है बड़ा सरीला।

2. आखिर कटे तो कीमत
खाए तो उसको हिम्मत।
बीच कटे तो दवा
सिरदर्द हो जाए हवा।

3. तीन आखर का मेरा नाम
उल्टा-सीधा हूं एक समान।
मोल चमक से आंका जाए
निकट रखो बना धनवान।

4. है पर्वत से सागर
तट तक काया।
अनाज और धन
जन-मन सभी समाया।

5. गर्मी में हूं लू कहलाती
सर्दी में बनती शीत लहर।
अंधड-बवंडर और तूफान
बनकर ढाती हूं मैं कहर।

6 . तीन आखर का मेरा नाम
बगिया उपवन है मेरे धाम।
बीच कटे तो कहता सुन
शुरू कटे तो जाता मन।

7. हरा रंग है शरीर छोटा सा
सजती हूं मैं लोगों के अंग।
रगड़ों, घोलो, जरा लगाओ
तब देखो फिर तुम मेरा रंग।

### उत्तर

1. आम 2. खरबूजा 3. कमाल 4. धरती
5. हवा 6. सुमन 7. मेहंदी

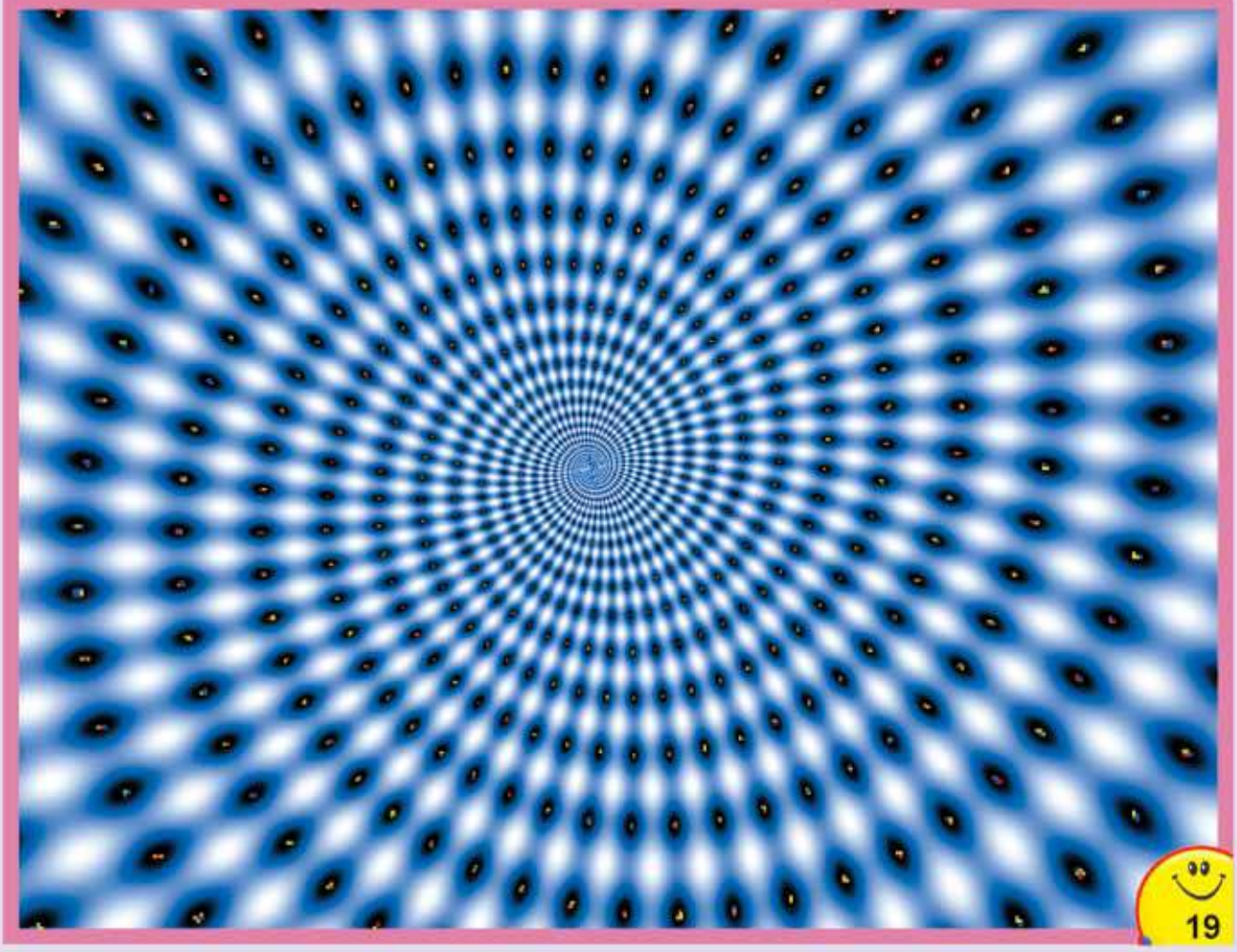

# हमारे भगवान की सर्विस 'टॉल फ्री' है

**मथुरा** में रहते थे, पंडित सरलप्रसाद। अपने नाम के मुताबिक ही वे सरल स्वभाव के थे। पंडितजी के बहुत सारे भ□त थे। एक बार एक भ□त यूरोप यात्रा पर गया, तो आग्रह करके पंडित जी को भी ले गया। पंडित जी घूमते हुए इटली पहुंचे तो वैटिकन सिटी में पोप से मिलने की इच्छा हुई। सरलप्रसाद गिरजाघर की विशाल चमचमाती इमारत में घुसे। चमचम करता संगमरमर का फर्श, दीवारों पर कलात्मक न□काशी और बेहतरीन साज-सज्जा देखकर सरलप्रसाद दंग रह गए।

वे भीतर गए। एक वातानुकूलित कक्ष में पोप आलीशान कुर्सी पर बैठे थे। पोप ने पंडितजी को सस□मान बैठाया। उनसे कुशलक्षेम पूछी, सत्कार किया और जलपान करवाया। दोनों धर्म-चर्चा करने लगे। तभी पंडित जी की नजर पोप की टेबल पर रखे एक लाल फोन पर पड़ी। उन्होंने पूछा, 'यह □या काम आता है?' पोप ने मुस्कुराकर कहा, 'यह भगवान के साथ मेरी हॉटलाइन है। जब भी कोई कठिन परिस्थिति आती है, मैं गॉड से बात कर लेता हूं।'

सरलप्रसाद जी उत्सुक हो उठे। उन्होंने पूछा, '□या मैं इसका उपयोग कर सकता हूं?' पोप ने कहा, 'हां-हां □यों नहीं। जरूर..।' पंडितजी ने फोन उठाया और कान से लगाया। गॉड ने फोन उठाया। पंडित जी ने उन्हें नमन किया, उनकी स्तुति की और बोले कि आपसे बात करके बड़ी प्रसन्नता हुई। फिर जल्दी से फोन रख दिया। उन्हें ज्यादा बात करनी आती ही नहीं थी। मुश्किल से पांच मिनट लगे होंगे।

पंडितजी ने पोप को फोन इस्तेमाल करने देने के लिए शुक्रिया कहा। पोप ने मुस्कुराकर कहा, 'देखिए सिर्फ पचह□ार रुपए में गॉड से बात हो गई।' पंडित जी अचरज में डूब गए। बोले, 'इतनी सी देर के स्त्रभ रुपए..?' पोप ने कहा, 'हां-हां, यह एसटीडी कॉल था न! इसके ज्यादा पैसे लगते हैं।' पंडित जी ने चुपचाप स्त्रभ रुपए निकाले और पोप को दे दिए। फिर अभिवादन करके लौट आए।

संयोग की बात। कुछ ही महीनों बाद पोप का मथुरा आना हुआ। पोप पंडित जी से मिलने उनके घर गए। पंडित जी ने दिल खोलकर पोप का स्वागत-सत्कार किया। पंडिताइन ने उन्हें लस्सी और पेड़े चखाए। फिर छक कर भोजन कराया। तभी पंडितजी की खटिया पर पड़े फोन के बारे में पोप ने पूछा। पंडितजी बोले, 'ये हमारी प्रभु के साथ के साथ हॉटलाइन है।'

पोप ने आज्ञा लेकर फोन उठाया और रोम के बारे में सब बताया। कई मुसीबतों के बारे में बताया। अपना हाल बताया। ईश्वर को प्रणाम किया और उनकी प्रेयर की। बड़े विद्वान थे। कोई आधे घंटे तक बातें करते रहे। फिर फोन रखकर उन्होंने पंडितजी से कहा, 'बड़ा अच्छा लगा भगवान जी से बात करके। वैसे इतनी देर का कॉल चार्ज कितना हुआ?'

पंडित जी बोले, 'कुछ भी नहीं। हमारे यहां भगवान ने टॉल-फ्री सर्विस दे रखी है, चाहे कितनी देर बातें करें, चाहे जितनी समस्या बताएं। सबका समाधान हो जाता है और कोई शुल्क नहीं लगता।' पोप देखते रह

# दिखाई सच्चाई

पवनपुर का राजा बहुत ही कुरूप था।
मंत्रीजी, यह घोषणा करवा दो कि महाराज अपना नाम बदल रहे हैं।
अब से हम सुंदर कुमार के नाम से जाने जाएंगे।
क्या!?
मेरे दरबार में अब सभी सुंदर होने चाहिए।
कुरूप लोगों को मेरे राज्य से निकाल कर बाहर कर दो।
जैसी आपकी इच्छा महाराज...!

पवनपुर के लोगों के सामने बहुत बड़ी समस्या आ गई।
मां, राजा की घोषणा के बाद अब मैं ज्यादा दिनों तक यहां नहीं रह पाऊंगा।
बेटा, हम निर्दयी राजा के सामने निस्सहाय हैं।
उन्होंने अपना दुख उस अजनबी को बताया।
जल्दी ही...
क्या हुआ बेटा, क्यो रो रहे हो?
हंह...
हुंह...मैं राजा के दरबार में जाता हूं, और उससे मिलता हूं।
यह विशाल नामक एक कलाकार था।
तुम कौन हो? और क्या चाहिए?
महाराज, मैं आपके लिए बहुत ही सुंदर आदमी की तस्वीर लाया हूं।
SUNIL VAKATHANAM

ठीक है, मुझे दिखाओ!
...और जल्दी ही विशाल ने राजा को चित्र दिखाया।
हा...हा...हा...कैसा मजाक है! यह तो सबसे कुरूप चेहरा है। मैंन ऐसा चेहरा कभी नहीं देखा।
यदि तुमने इसकी किसी के सामने प्रशंसा की तो मैं तुम्हारा सिर काट दूंगा।
लेकिन महाराज यह तो दर्पण है। इसमें आपका प्रतिबिम्ब है।
हं...क्या?!
राजा ने अपने आप को पहली बार इस दर्पण में देखा था।
मैं इतना कुरूप हूं!
धक्क!
सीख- शारीरिक सुंदरता क्षणिक है। ज्ञान प्राप्ति का जतन करो। वही सच्ची सुंदरता है।
इसके बाद राजा ने किसी को भी कुरूपता के लिए सजा नहीं दी।
(समाप्त)

# मसखरा चार्ली चैप्लिन

*अपनी मूक फिल्मों में भी चार्ली चैप्लिन ऐसा अभिनय कर जाते थे कि पेट में हंसकर बल पड़ जाएं। चैप्लिन के कुछ किस्से...।*

☺ मोन्टे कार्लो में चार्ली चैप्लिन जैसा दिखने की एक प्रतियोगिता चल रही थी। किसी को बताए बिना स्वयं चार्ली भी इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेने पहुंच गए। मजे की बात देखिये कि वे तीसरे न□बर पर रहे...।

☺ एक बार चार्ली चैप्लिन अपने मित्र मशहूर चित्रकार पा□लो पिकासो से मिलने गए। पा□लो किसी पेन्टिंग पर काम कर रहे थे। बातों-बातों में उनके ब्रश से पेन्ट के कुछ छींटे चार्ली की नई सफेद पतलून पर लग गए। पा□लो ने झेंपते हुए माफी मांगी और पतलून से रंग साफ करने के लिए किसी चीज को ढूंढने लगे। चार्ली ने तुरन्त कहा, 'छोड़ो पा□लो! अपनी कलम निकाल कर मेरी पतलून पर अपने दस्तखत कर दो बस...!'

☺ वर्ष क-ब में जब चार्ली ने अपनी फिल्म 'द ग्रेट डि□टेटर' पर काम करना शुरू किया तो अडोल्फ हिटलर का मजाक उड़ाती इस फिल्म की सफलता को लेकर उनके मन में गंभीर संशय थे। वे अपने दोस्तों से लगातार पूछा करते थे, 'सही बताना... मुझे इस फिल्म को बनाना चाहिये या नहीं...। मान लिया हिटलर को कुछ हो गया तो....। या जाने कैसी परिस्थितियां बनें...।'
चैप्लिन के प्रिय मित्र डगलस फेयरबैं□स ने चार्ली से कहा, 'तु□हारे पास कोई और विकल्प नहीं है चार्ली! यह मानव इतिहास की सबसे चमत्कारिक ट्रिक होने जा रही है कि दुनिया का सबसे बड़ा खलनायक और दुनिया का सबसे बड़ा मसखरा... दोनों एक जैसे दिखें। अब अगर-मगर बन्द करो और फिल्म में जुट जाओ...।'

☺ 'मुझे अकल्पनीय पैसा मिलता था...।' यह बात चैप्लिन ने एक इन्टरव्यू में बतायी थी। मेरे अकाउन्ट में बहुत पैसा था पर मैंने उसे कभी देखा नहीं था। सो मुझे इस बात को सिद्ध करने के लिए कुछ करना था। सो मैंने एक सेक्रेटरी रखा, एक बटुआ खरीदा, एक कार खरीदी और एक ड्राइवर काम पर लगा दिया। एक शोरूम के बाहर से गुजरते हुए मैंने सात सवारियों वाली एक कार देखी, जिसे उन दिनों अमेरिका में सबसे अच्छी कार माना जाता था। दरअसल बेचने के लिहाज से वह गाड़ी कहीं अधिक चमत्कारिक थी। खैर मैं भीतर गया और मैंने पूछा, 'कितने की है...।' जवाब मिला, 'चार हजार नौ सौ डॉलर...।'

'पैक कर दीजिये,' मैंने कहा।
वह आदमी हैरान हो गया, और उसने इतनी बड़ी खरीद में जल्दी कर लेना ठीक नहीं समझा।
'सर आप इंजिन देखना चाहेंगे?'
'□या फर्क पड़ता है, मुझे उसके बारे में कुछ नहीं पता।'
अलब□ा चैप्लिन ने गाड़ी के एक टायर को अपने अंगूठे से दबा कर देखा ताकि वे थोड़ा पेशेवर नजर आ सके।

☺ चैप्लिन को हॅलीवुड आये अभी ज्यादा समय नहीं हुआ था। एक दिन पटकथा लेखक चार्ल्स मैक आर्थर ने चार्ली से सलाह मांगी कि वह एक मोटी औरत को केले के छिलके पर गिरते हुए दिखाकर दर्शकों को कैसे हंसा सकते हैं। यह दृश्य लाखों बार दिखाया जा चुका है। मैं पहले केला दिखाऊं, फिर मोटी औरत और फिर उसे गिरते हुए,... या पहले औरत को दिखाऊं, फिर केला और फिर गिरते हुए,.. उन्होंने पूछा। चार्ली ने जवाब दिया, 'मैं तीसरा तरीका बताता हूं। तुम पहले मोटी औरत को आते हुए दिखाओ, फिर केले का छिलका दिखाओ और फिर दिखाओ कि केले

# कौन किसका नौकर

**जब** कभी दरबार में अकबर और बीरबल अकेले होते थे तो किसी न किसी बात पर बहस छिड़ जाती थी। एक दिन बादशाह अकबर बैंगन की स□जी की खूब तारीफ कर रहे थे। बीरबल भी बादशाह की हां में हां मिला रहे थे। इतना ही नहीं, वह अपनी तरफ से भी दो-चार वा□य बैंगन की तारीफ में कह देते थे।

अचानक बादशाह अकबर के दिल में आया कि देखें बीरबल अपनी बात को कहां तक निभाते हैं। यह सोचकर बादशाह बीरबल के सामने बैंगन की बुराई करने लगे। बीरबल भी उनकी हां में हां मिलाने लगे कि बैंगन खाने से बीमारियां हो जाती हैं, ये हो जाता है... इत्यादि।

बीरबल की बात सुनकर बादशाह अकबर हैरान हो गए और बोले, 'बीरबल! तु□हारी इस बात का यकीन नहीं किया जा सकता। कभी तुम बैंगन की तारीफ करते हो और कभी बुराई करते हो। जब हमने इसकी तारीफ की तो तुमने भी इसकी तारीफ की और जब हमने इसकी बुराई की तो तुमने भी इसकी बुराई की, आखिर ऐसा □यों?'

बीरबल ने नरम लहजे में कहा, 'बादशाह सलामत! मैं आपका नौकर हूं, बैंगन का नहीं।'

# बादशाह का सपना

**एक** रात सोते समय बादशाह अकबर ने अजीब सपना देखा कि केवल एक छोड़कर उनके बाकी सभी दांत गिर गए हैं। फिर अगले दिन उन्होंने देशभर के वि□यात ज्योतिषियों व नुजूमियों को बुला भेजा और और उन्हें अपने सपने के बारे में बताकर उसका मतलब जानना चाहा। सभी ने आपस में विचार-विमर्श किया और एकमत होकर बादशाह से कहा, 'जहांपनाह, इसका अर्थ यह है कि आपके सारे नाते-रिश्तेदार आपसे पहले ही मर जाएंगे।'

यह सुनकर अकबर को बेहद क्रोध हो आया और उन्होंने सभी ज्योतिषियों को दरबार से चले जाने को कहा। उनके जाने के बाद बादशाह ने बीरबल से अपने सपने का मतलब बताने को कहा। कुछ देर तक तो बीरबल सोच में डूबा रहा, फिर बोला, 'हुजूर, आपके सपने का मतलब तो बहुत ही शुभ है। इसका अर्थ है कि अपने नाते-रिश्तेदारों के बीच आप ही सबसे अधिक समय तक जीवित रहेंगे।'

बीरबल की बात सुनकर बादशाह बेहद प्रसन्न हुए। बीरबल ने भी वही कहा था जो ज्योतिषियों ने कहा, लेकिन कहने में अंतर था। बादशाह ने बीरबल को इनाम देकर विदा किया।

## किस्से अकबर-बीरबल के

# ऊंट की गर्दन मुड़ी क्यों होती है

**अकबर** बीरबल की हाजिरजवाबी के बड़े कायल थे। एक दिन दरबार में खुश होकर उन्होंने बीरबल को कुछ पुरस्कार देने की घोषणा की। लेकिन बहुत दिन गुजरने के बाद भी बीरबल को धनराशि (पुरस्कार) प्राप्त नहीं हुई। बीरबल बड़ी ही उलझन में थे कि बादशाह को याद दिलाएं तो कैसे?

एक दिन बादशाह अकबर यमुना नदी के किनारे शाम की सैर पर निकले। बीरबल उनके साथ था। अकबर ने वहां एक ऊंट को घूमते देखा। अकबर ने बीरबल से पूछा, 'बीरबल बताओ, ऊंट की गर्दन मुड़ी □यों होती है?'

बीरबल ने सोचा, महाराज को उनका वादा याद दिलाने का यह सही समय है। उन्होंने जवाब दिया, 'हुजूर, यह ऊंट किसी से वादा करके भूल गया है, जिसके कारण ऊंट की गर्दन मुड़ गयी है। कहते हैं कि जो भी अपना वादा भूल जाता है तो भगवान उनकी गर्दन ऊंट की तरह मोड़ देता है। यह एक तरह की सजा है।'

तभी अकबर को ध्यान आता है कि वो भी तो बीरबल से किया अपना एक वादा भूल गये हैं। उन्होंने बीरबल से जल्दी से महल में चलने के लिये कहा। महल में पहुंचते ही सबसे पहले बीरबल को पुरस्कार की धनराशि उसे सौंप दी, और बोले, 'मेरी गर्दन तो ऊंट की तरह नहीं मुड़ेगी बीरबल।' और यह कहकर अकबर अपनी हंसी नहीं रोक

# कभी हंसाते, कभी रुलाते

सार के सभी देशों के प्राचीन साहित्य को देखने पर ज्ञात होता है कि प्राय: सभी राजा-महाराजा, बादशाह, सुल्तान व नवाब अपने-अपने दरबारों, राजसभाओं में कुछ विदूषक या मसखरे अवश्य रखते थे। ये विदूषक अत्यन्त बुद्धिमान और बाल की खाल निकालने में बहुत चतुर होते थे। राजकाज की उलझनों में थके-झुंझलाये शासक इन विदूषकों की संगति में थोड़ी देर रहकर ही अपने मन-मस्तिष्क का भार हल्का कर लेते थे।

तुर्की, यूनान, ईरान, ईराक व मिश्र आदि देशों में जनता का मनोरंजन करने व अत्याचारी शासकों के नाक में दम कर देने वाले □वाजा नसरुद्दीन को लोग आज भी इस प्रकार याद करते हैं, मानों वह उनका कोई बहुत प्यारा संबंधी अथवा मित्र हो। बुखारा में जन्मे □वाजा नसरुद्दीन अत्यन्त चतुर व दूर की कौड़ी लाने वाले दूरदर्शी व्य□ित थे।

किसी समय उनका नाम सुनकर तुर्की, यूनान व ईरान के सुल्तानों, अमीरों और खलिफाओं की बोलती बंद हो जाया करती थी। अपने सफेद रंग के दुलारे गधे पर सवार □वाजा नसरुद्दीन ऐसी तूफानी चाल चलते थे कि इनके विरोधी दांतों तले उंगली दबाने और बेबसी से हाथ मलने के सिवा इनका बाल भी बांका नहीं कर पाते थे। अपनी हाजिरजवाबी, सभाचातुरी एवं हंसती-खिलखिलाती भाषा के बल पर वे अनेक बार फांसी के फंदे को भी अंगूठा दिखा कर साफ बच निकलते थे।

जर्मनी के वि□यात विदूषक 'टिल ओएलन स्पगिल' जीवनभर दूसरों को मूर्ख बना कर स□मान व पैसा दोनों हाथों से बटोरते रहे। टिल ने अपनी मृत्यु के समय भी इस आदत को नहीं छोड़ा। टिल के पास एक विशाल आकार का लकड़ी का संदूक था। लोग समझते थे कि इसी संदूक में टिल महोदय अपनी सारी जमा पूंजी सुरक्षित रखते होंगे।

टिल भी इस बात को अच्छी तरह जानते थे और उन्होंने लोगों का यह विश्वास कभी भी नहीं तोड़ा। अपने अन्तिम समय में टिल ने वसीयत की, 'मेरे सन्दूक में पर्याप्त धन है, मेरे मरने के बाद, आधा धन मेरे मित्रों में बांट दिया जाये और शेष आधा धन नगर पालिका को दे दिया जाये।' इस वसीयत के कुछ ही समय बाद टिल की मृत्यु हो गई।

नगरपालिका को टिल के संदूक वाले धन में हिस्सा मिलना था। इसलिए उसने शानदार ढंग से टिल का अंतिम संस्कार करने की योजना बनाई। मित्रों ने भी जी खोलकर इस अवसर पर खर्च किया। नगर की प्रधान सड़कों पर से मसखरे टिल की अर्थी का विशाल जुलूस निकाला गया। तीन दिन तक शोक मनाने की रस्म पूरी होने पर टिल का वह संदूक सब के सामने खोला गया। सभी हिस्सेदार उस समय वहां पर उपस्थित थे। सन्दूक खुला तो सबके सब सिर पीट कर रह गए। सन्दूक तो मोटे मोटे पत्थरों, ईंटों, फटे-पुराने चिथड़ों से भरा था। इस प्रकार अपनी मृत्यु के बाद भी टिल एक बार लोगों से मसखरी करने में सफल हो गया।

सम्राट अकबर के दरबार के नवरत्नों में एक बीरबल के नाम से कौन परिचित नहीं होगा! बीरबल हंसने-हंसाने व बात में से बात उत्पन्न करने में बेजोड़ थे। सम्राट अकबर से इनका परिचय भी बड़े अनोखे ढंग से हुआ था। बात यह थी कि एक दिन पनवाड़ी ने सम्राट के पान में भूल से कुछ ज्यादा चूना लगा दिया। जिससे सम्राट का मुंह फट गया। अप्रसन्न होकर सम्राट ने पनवाड़ी को आदेश दिया कि वह एक सेर चूना तुरंत खाये। बेचारा पनवाड़ी □या करता? वह बाजार से चूना खरीदने गया। चूने की दुकान के पास ही एक युवक खड़ा था। उसने पनवाड़ी का उदास मुख व सेर भर की मांग सुनकर ही पूछ लिया कि इस चूने का वह □या करने जा रहा है। पनवाड़ी ने सारी बात बता दी। युवक ने कुछ सोचकर कहा, 'तुम चूना पीने से पहले एक सेर घी पी लेना।' पनवाड़ी ने उस

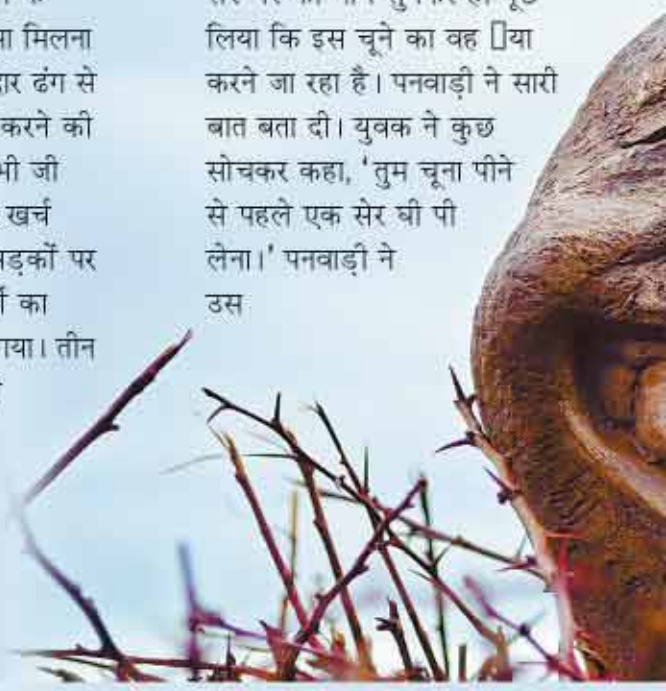

# कभी बहलाते, ये विदूषक

घी पीने के बाद चूना पीते ही उसे जोरदार वमन हुई और सारा चूना तुरंत ही बाहर आ गया। सम्राट को जब यह बात मालूम हुई, तो तुरंत युवक को बुलाया और कुछ दिन अपने पास रखकर उसकी बुद्धि की परीक्षा करने के बाद उसे अपना दरबारी बना लिया। वह साधारण युवक ही एक दिन बीरबल के नाम से वि□यात हुआ।

दक्षिण भारत के विजय नगर राज्य के शासक महाराज कृष्णदेव के मित्र सलाहकार दरबारी कवि एवं विदूषक के रूप में 'तेनालीराम' का नाम प्रसिद्ध है। तेनालीराम सभी शास्त्रों के ज्ञाता थे उनका बचपन का नाम रामलिंग था। पढ़-लिख कर उन्होंने अपना नाम रामकृष्ण रख लिया। परन्तु तेनाली नामक गांव में जन्म लेने के कारण लोग उन्हें तेनालीराम ही कहने लग गये। धीरे-धीरे उनका यही नाम लोगों को याद रह गया। अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद तेनालीराम को महाराजा कृष्णदेव से मिलने की इच्छा हुई। उन्होंने राजपंडित ताताचार्य से इसके लिए प्रार्थना की। ताताचार्य धूर्ततापूर्वक कई प्रकार की बातें बना कर तेनालीराम को टालता रहा। इसी प्रकार बहुत समय बीत गया। एक दिन ताताचार्य नदी में स्नान कर रहा था। उसी समय तेनालीराम भी वहां जा पहुंचा। उसने तत्काल ही तट पर रखे ताताचार्य के कपड़े पहचान कर उठा लिये।

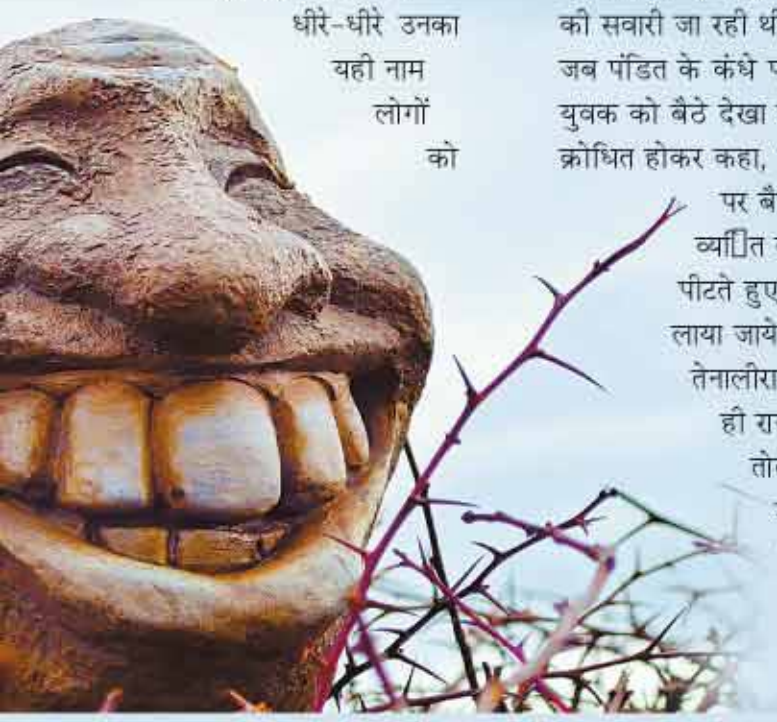

पंडित जी ने जब अपने वस्त्र मांगे तो तेनालीराम ने उ□र दिया, 'आचार्य जी! अगर आप मुझे अपने कंधे पर बैठा कर मेरे घर तक पहुंचाने को तैयार हों तो मैं आपके वस्त्र लौटा सकता हूं।' बेबस होकर ताताचार्य तेनालीराम को अपने कंधे पर बैठा कर ले चला। रास्ते में महाराज कृष्णदेव की सवारी जा रही थी। राजा ने जब पंडित के कंधे पर किसी युवक को बैठे देखा तो उन्होंने क्रोधित होकर कहा, 'इस कंधे पर बैठे ढीठ व्य□ित को कोड़ों से पीटते हुए मेरे पास लाया जाये।' तेनालीराम ने दूर से ही राजा के तेवर तोल लिये। उसने चतुराईपूर्वक ताताचार्य से कहा, 'आचार्य जी, मैं तो आपसे यों ही मजाक कर रहा था। अब आप मेरे कंधे पर बैठिये। मैं आपको आपके घर तक पहुंचा कर इस अपराध का प्रायश्चित करूंगा।' थके-हारे ताताचार्य तुरंत ही तेनालीराम के कंधे पर बैठ गए। तब तक राजा के सिपाही भी वहां आ पहुंचे। राजाज्ञा के अनुसार उन्होंने तेनालीराम के कंधे पर बैठ ताताचार्य को कोड़ों से धुनते हुए राजा कृष्णदेव के स□मुख उपस्थित किया।

राजा ने यह देखा तो वे चकित रह गए। गुणों की परख करने वाले राजा कृष्ण देव ने तेनालीराम की विलक्षण सूझबूझ को तत्काल ही परख लिया और उन्हें अपना अन्तरंग मित्र व दरबारी कवि बना लिया कर स□मानित किया।

बिहार प्रान्त के दरभंगा जिले में जन्मे 'गोनू झा' अपने मार्मिक कहकहों के लिए सदियों से प्रसिद्ध हैं। 'गोनू झा' को लोग 'अनपढ़ विद्वान' के रूप में □ी जानते हैं। मैथिली ब्राह्मण गोनू झा को किसी देवी का इष्ट था। इसी कारण उनको 'वाक्सिद्धि' भी प्राप्त थी।

लोग आदर के साथ गोनू झा से इस कारण भयभीत भी रहते थे कि कहीं क्रोध में आकर वे कोई बुरी बात मुंह से न निकाल दें। परन्तु सरल हृदय गोनू झा को किसी की बुराई-भलाई से कुछ भी लेना-देना नहीं था। उनका काम तो रोतों को हंसाना और हंसने वालों

# लाफिंग बुद्धा

## हंसाते हैं, आशा जगाते हैं

**एक** चमत्कारी चीनी देवता हैं, 'हंसोड़ बुद्ध,' जिसे अंग्रेजी में 'लाफिंग बुद्धा,' चीनी में 'पु ताइ' एवं जापान में 'ह तेई' के नाम से जाना जाता है। प्रचलित रूप में इन्हें 'लाफिंग बुद्धा' ही कहा जाता है।

ऐसा कहा जाता है कि 'पु ताइ' नाम का यह भिक्षु चीनी राजवंश त्यांग काल (वर्ष 502-507) में मौजूद था। वह घुमंतू तबीयत एवं मस्त प्रकृति का था। वह जहां जाता, वहीं अपनी तोंद और थुलथुल बदन के प्रताप से समृद्धि एवं खुशियां बांट आता था। बच्चे विशेष तौर पर उसकी पसंद थे और वह भी बच्चों की पसंद था।

लाफिंग बुद्धा की पहचान है- सफाचट कपाल, गुब्बारे की तरह बाहर निकली हुई तोंद, चेहरे पर हरदम हंसी एवं गले पर कपड़े की पोटली, जिसमें धान की पौध एवं सोने की गिन्नियों से लेकर बच्चों के लिये मिठाई तक तरह-तरह का माल भरा रहता था। इनका मन जिस पर आ गया, उसे वे उपहारों से मालामाल कर देते थे। जो माल पाने से वंचित रह जाते थे, वे उनके दर्शनभर से तृप्त हो जाते थे।

जापान में 'हंसोड़ बुद्ध' समृद्धि एवं खुशहाली के पांच स्थानीय देवताओं में से एक माने जाते हैं। हालांकि मूलतः वे ताओवादी संत थे, परंतु एक हजार साल पहले बौद्ध बन चुके थे। तब बौद्ध धर्म में महायान शाखा का जोर हो चला था एवं इस धर्म में अवतारों की भी परिकल्पना की जाने लगी थी। यही सारी बातें 'पु ताइ' से आ जुड़ीं। 'हंसोड़ बुद्ध' एक जनदेवता की हैसियत रखते थे, लेकिन आम मनुष्य की कल्पना में उनका ऐसा जादू चला कि उनकी हैसियत के बारे में कई तरह की बातें प्रचलित हो गईं। जैसे, वे गौतम बुद्ध से आमने-सामने मिले थे एवं उन्हें मैत्रेय यानी भावी बुद्ध के नाम से नवाजा गया था। मैत्रेय बुद्ध चीनी भाषा में मी लो फो कहलाते हैं। 'हंसोड़ बुद्ध' आज चीन एवं जापान में ही नहीं, बल्कि अन्य एशियाई देशों के अलावा पश्चिमी देशों में भी घर-घर में छा चुके हैं।

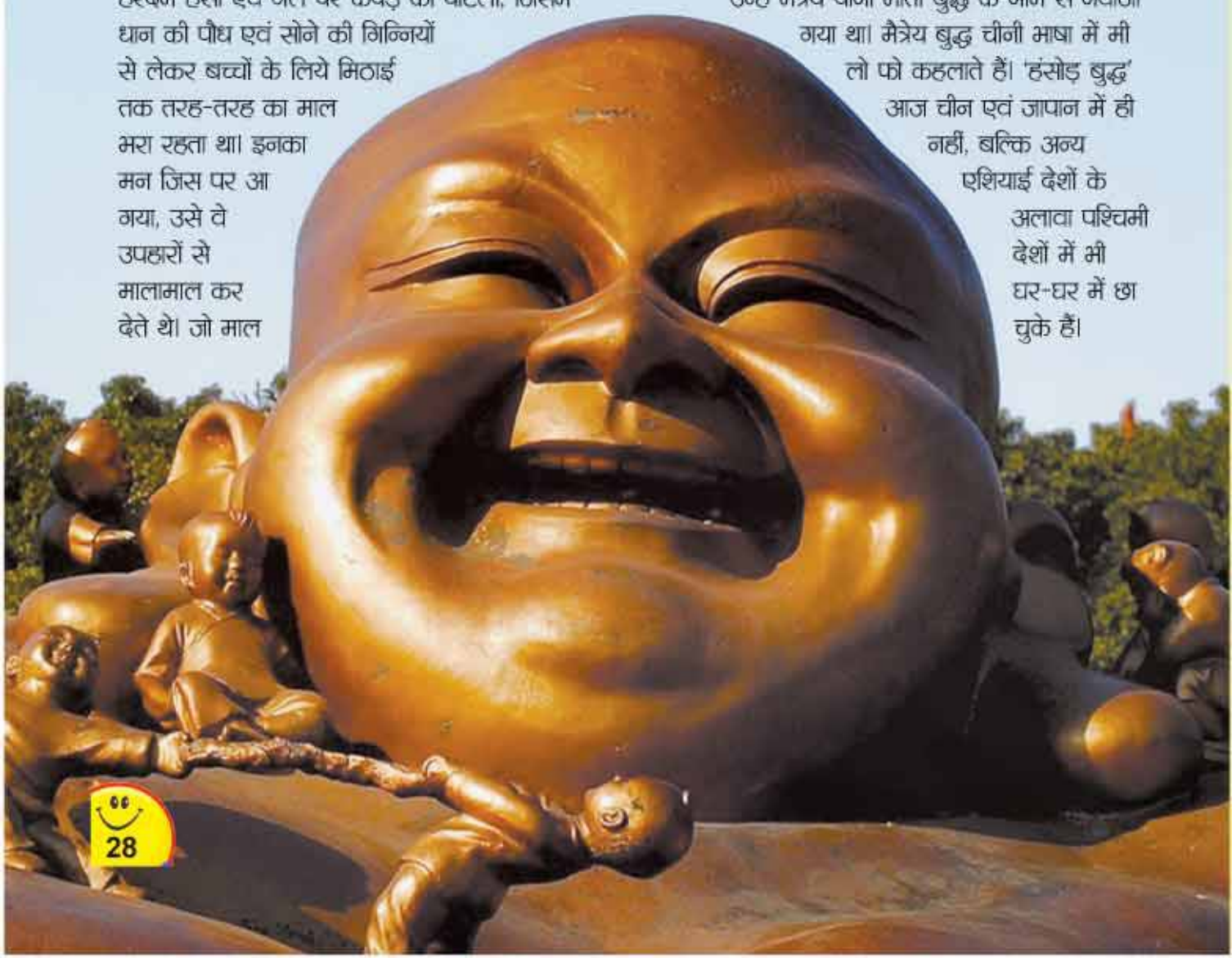

# मूर्ख दिवस की मूर्खतापूर्ण कथाएं

**दोस्तो,** फर्स्ट अप्रेल यानी मूर्ख दिवस के विषय में संसार में कई लोककथाएं प्रचलित हैं। हर कथा का मूल उद्देश्य है, पूरे दिन को मनोरंजन के साथ व्यतीत करना। आइए आपको इस दिवस की कुछ कथाओं से अवगत कराते हैं।

**बहुत** पहले यूनान में मो□सर नामक एक मजाकिया राजा था। एक दिन उसने स्वप्न में देखा कि किसी चींटी ने उसे जिंदा निगल लिया है। सुबह उसकी नींद टूटी तो स्वप्न ताजा हो गया। स्वप्न की बात पर वह जोर-जोर से हंसने लगा। रानी ने हंसने का कारण पूछा तो उसने बताया, 'रात मैंने सपने में देखा कि एक चींटी ने मुझे जिन्दा निगल लिया है। सुन कर रानी भी हंसने लगी। तभी एक ज्योतिष ने आकर कहा, महाराज इस स्वप्न का अर्थ है, 'आज का दिन आप हंसी-मजाक व ठिठोली के साथ व्यतीत करें। उस दिन अप्रेल महीने की पहली तारीख थी। बस तब से लगातार एक हंसी-मजाक भरा दिन हर वर्ष मनाया जाने लगा।

एक अन्य लोक कथा के अनुसार, एक अप्सरा ने किसान से दोस्ती की और कहा, 'यदि तुम एक मटकीभर पानी एक ही सांस में पी जाओगे तो मैं तु□हें वरदान दूंगी। मेहनतकश किसान ने तुरंत पानी से भरा मटका उठाया और पी गया।

जब उसने वरदान वाली बात दोहराई तो अप्सरा बोली, 'तुम बहुत भोले-भाले हो, आज से तु□हें मैं यह वरदान देती हूं कि तुम अपनी चुटीली बातों से लोगों के बीच खूब हंसी-मजाक करोगे। अप्सरा का वरदान पाकर किसान ने लोगों को बहुत हंसाया। हंसने-हंसाने के कारण ही एक हंसी का पर्व जनमा, जिसे हम मूर्ख दिवस के नाम से पुकारते हैं।

बहुत पहले चीन में सनन्ती नामक एक संत थे। जिनकी दाढ़ी जमीन तक ल□बी थी। एक दिन उनकी दाढ़ी में अचानक आग लग गई तो वे बचाओ-बचाओ कह कर उछलने लगे। उन्हें इस तरह उछलते देख कर बच्चे जोर-जोर से हंसने लगे। तभी संत ने कहा, मैं तो मर रहा हूं, लेकिन तुम आज के ही दिन खूब हंसोगे, इतना कह कर उन्होंने प्राण त्याग दिए।

उन दिनों स्पेन के राजा माउन्टो बेर थे। एक दिन उन्होंने घोषणा कराई कि जो सबसे अच्छा सच-झूठ लिख कर लाएगा, उसे इनाम दिया जाएगा। प्रतियोगिता के दिन राजा के पास 'सच-झूठ' के हजारों खत पहुंचे, लेकिन राजा किसी के खत से संतुष्ट नहीं थे। अंत में एक लड़की ने आकर कहा, 'महाराज मैं गूंगी और अंधी हूं।' सुनकर राजा चकराया और पूछा, '□या सबूत है कि तुम सचमुच अंधी हो। तब तेज-तर्राट किशोरी बोली, 'महल के सामने जो पेड़ लगा है। वह आपको तो दिखाई दे रहा है, लेकिन मुझे नहीं।'

इस बात पर राजा खूब हंसा। उसने किशोरी के झूठे परिहास का इनाम दिया और प्रजा के बीच घोषणा करवाई कि अब हम हर वर्ष पहली अप्रेल को मूर्ख दिवस का दिन मनाएंगे। तब से आज तक यह पर□परा चली आ रही है।

# पढ़ाकू लड़की

**ब्रिटेन** में एक नौ साल की पढ़ाकू लड़की ने ऐसा कारनामा कर दिखाया, जिसे जानकर आप चकित हो जाएंगे। वह महज सात महीनों में ही अविश्वसनीय रूप से 364 किताबें पढ़ चुकी है। चेशायर के एश्ले में रहने वाली फेथ जैक्शन खुद को

टेलीविजन कम्प्यूटर गेम से दूर रखती है। वह इनकी जगह रोआल्ड दाल्ह या हैरी पॉटर को पढ़ना ज्यादा पसंद करती है। उसे किताबों से बेहद लगाव है। जब वह प्राइमरी स्कूल में थी, तब शिक्षकों द्वारा प्रोत्साहित किये जाने पर उसमें किताबों के प्रति प्रेम बढ़ा। उसे टीवी या कम्प्यूटर गेम की तरह ही किताबों को पढ़ने में बेहद मजा आता है। फेथ को सबसे ज्यादा जानवरों या जादू या रोमांच की किताबें पसंद हैं। साथ ही यह भी कहती है कि मेरी दुनिया सिर्फ किताबों तक ही सीमित नहीं है। मैं सप्ताह में चार घंटे जिम्नास्टिक करती हूं। इसके अलावा कराटे क्लासेस जाती हूं। नेटबॉल खेलती हूं और ड्रम बजाना सीख रही हूं।

# पूंछ वाला बच्चा

**पंजाब** प्रांत के फतेहपुर में एक बारह वर्षीय बच्चे अरशाद अली की कमर के नीचे पूंछ निकली हुई है। डॉक्टरी भाषा में इसे मेनिंगोसिले नामक बीमारी के नाम से जाना जाता है। पर आम लोग इसे कुछ और ही मान रहे हैं। खबरों के अनुसार पूंछ होने के साथ ही अरशद की पीठ पर कई निशान भी हैं। पर अरशाद की अपनी जिंदगी बहुत ही चुनौतीपूर्ण है। अरशाद के पिता की मृत्यु हो चुकी है। उसकी मां दूसरी शादी कर अपने पति के साथ रहती है। बचपन से अकेलेपन का दंश झेल रहा अरशाद अपने नाना के साथ रहता है। उसके नाना ही उसकी देखभाल करते हैं। इस अनचाही पूंछ के कारण अरशाद को चलने, उठने-बैठने में दिक्कत होती है। इसे हटाने के लिए ऑपरेशन की बात की तो डॉक्टरों ने ऑपरेशन से अरशाद की जान को खतरा बताया। सातवीं कक्षा का छात्र अरशाद, लोगों के लिए कौतूहल का विषय बना हुआ है।

# शेरों से है दोस्ती

**साउथ** अफ्रीकी के जूलॉजिस्ट केविन रिचर्डसन पिछले कई सालों से अफ्रीका के जानवरों पर शोध कर रहे हैं। कई दशकों के शोध और अनुसंधान के बाद रिचर्डसन दक्षिण अफ्रीका के शेरों के साथ एक अनोखा सम्बन्ध विकसित कर पाए हैं। अब ये इन शेरों को गले लगाते हैं, उनके साथ खेलते हैं। केविन अपनी टीम के साथ कार में कैमरे और जरूरी सामान रखकर इन जंगली जानवरों के बहुत करीब जाते हैं। टीम के सभी सदस्य गाड़ी के अंदर रहते हैं, लेकिन केविन बाहर निकलकर इन्हें पुकारते हैं और धीरे-धीरे ये खूंखार जानवर बाहर निकलकर इनसे गले मिलते हैं और इनके साथ खेलते हैं। सुनने में जरूर ये सब चौंकाने वाला लगता है। लेकिन ये जानवर केविन से ऐसे मिलते हैं। जिन्हें देख लगता है जैसे ये पालतू हों। केविन इन शेरों के बालों को सहलाते हैं और शेर भी इत्मीनान से इनके पास बैठते हैं। सिर्फ शेर ही नहीं अफ्रीका के सभी जंगली जानवरों के साथ इनके ऐसे ही रिश्ते हैं। जिन्हें देख कोई भी दंग रह जाएगा।

# हवा है इस कार का ईंधन

**इंटरनेट** पर दोस्त बने रोमानिया के राउल ओएदा और ऑस्ट्रेलिया के स्टीव समारटिनो ने बातों-बातों में इस तकनीक पर चर्चा की और इसको बनाने की ठानी। लेगो ब्लॉक से बनी और हवा से चलनेवाली इस कार की अधिकतम रफ्तार तीस किलोमीटर प्रति घंटा है। रोमानियाई तकनीशियन और ऑस्ट्रेलियाई उद्यमी ने इस कार को बनाने के लिए पांच लाख लेगो ब्लॉक(प्लास्टिक की एक संरचना होती है, जिसमें खांचे बने होते हैं) का इस्तेमाल किया। इस कार को बनाने में 18 महीने का वक्त और लगभग साठ हजार अमेरिकी डॉलर खर्च हुए। जो सामूहिक योगदान से इकट्ठा किया गया। इस कार की खासियत यह है कि पहिया छोड़कर सब कुछ लेगो ब्लॉक का बना हुआ है। हवा से चलने वाले चार इंजन और 256 पिस्टन कार को शक्ति प्रदान करते हैं।



# एक अनूठी प्रतियोगिता

**दोस्तो,** बालहंस तुम्हारे मनोरंजन, ज्ञान की जरूरतों का हमेशा से ध्यान रखता आ रहा है। इस बार हम आपके लिए एक स्वादभरा तोहफा लेकर आये हैं। एक अप्रेल को हमने खास प्रतियोगिता का आयोजन रखा है। इस दिन बच्चों को अपने-अपने गांव, शहर के खुले मैदान में इकट्ठा होना है। मैदान का नाम जल्दी ही आपको फोन पर बता दिया जायेगा। वहां हमारे प्रतिनिधि आपको मिलेंगे। उनके हाथों में होंगी रसगुल्लों से भरी प्लेटें। उन प्लेटों तक पहुंचकर वे रसगुल्ले आपको गटकने हैं। लेकिन ये इतना आसान नहीं होगा। क्योंकि जहां प्लेट लेकर हमारा प्रतिनिधि खड़ा होगा, उसके और आपके बीच एक दस फीट का सपाट गड्ढा होगा। जो उस गड्ढे से सुरक्षित निकलकर सबसे पहले प्लेट तक पहुंचेगा, उसे वे स्वादिष्ट रसगुल्ले खाने का मौका मिलेगा। अब आप कहेंगे कि केवल रसगुल्लों के लिये इतना कष्ट क्यों! तो सुनिये, जो यह काम सर्वप्रथम कर पायेगा, वह हमारी बालहंस आजीवन मुफ्त तो पाएगा ही, साथ ही साथ उसे एक स्पेशल हवाई जहाज से एवरेस्ट की सैर भी करवाई जायेगी। तो फिर एक अप्रेल को इस अनूठी प्रतियोगिता और इनाम के लिये आप तैयार हो जाइये। हां, जो भी करना थोड़ा दिमाग पर जोर डालकर सोच-समझ कर करना। जमाना खराब है।

(यह रसगुल्ला, एक अप्रैल को फूलने के लिये है। कोई भी मिस्री की आकृति फूल बना सकता है)

# कैंडी

कैंडी श्रीलंका का पॉपुलर हिल स्टेशन है दोस्तो। खूबसूरत प्राकृतिक दृश्य यहां आने वाले पर्यटकों के स्वागत के लिए आतुर दिखायी देते हैं। जहां तक दृष्टि जाती है, चारों ओर हरियाली की चादर बिछी नजर आती है।

दुनिया के न□शे पर बूंद के समान श्रीलंका के बीचोंबीच है, खूबसूरत शहर कैंडी। यह देश की सेन्ट्रल प्रोविन्स की राजधानी है। इसका असली नाम महानुवारा है। चौदहवीं शता□दी में बसा यह शहर अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है। वैसे, इस शहर और इसके आस-पास कई जगहें देखने लायक हैं।

**टेंपल ऑफ ट्रुथ**- वर्ल्ड हेरिटेज सेंटर्स की लिस्ट में यह मंदिर शामिल है। हालांकि अब यहां की सभी पेंटिंग्स पुरानी नहीं रहीं। लेकिन इनकी झलक उस समय की कला और रहन-सहन के बारे में बहुत कुछ बयां करती है।

**कैंडी लेक**- टेंपल ऑफ ट्रुथ के पास है यह लेक, जहां आप एक अच्छी शाम गुजार सकते हैं।

**व्यू पॉइंट**- कैंडी की खूबसूरती को निगाहों में भरने के लिए व्यू पॉइंट जरूर जाएं। यहां आपको जो नजारा देखने को मिलेगा। उसे श□दों में बांधना आपके लिए भी आसान नहीं होगा।

**कल्चरल शो**- कैंडी के कल्चरल सेंटर में शाम को साढ़े पांच बजे होने वाला कल्चरल शो जरूर देखें। इसकी शुरुआत पांच अलग-अलग वाद्यों को बजाने के साथ होती है और कोबरा डांस, गुरु को समर्पित डांस से होते हुए इसका अंत आग के खेल पर होता है। इस दौरान कलाकार अंगारों पर चलते हैं और जलती हुई लकड़ी को शरीर पर लगाने का खेल दिखाते हैं।

**माइनिंग इंडस्ट्री की जानकारी**-यहां माइनिंग वर्कशॉप जरूर देखें। यहां आपको तमाम तरह के स्टोन्स से जुड़ी पूरी जानकारी मिलेगी।

## सैर सपाटा

**दंबुला का केव टेंपल-** कैंडी से तीन घंटे की ड्राइव पर बना दंबुला का केव टेंपल वर्ल्ड हेरिटेज सेंटर्स की लिस्ट में आता है। इस केव टेंपल को अजंता-एलौरा के समय का माना जाता है। जिसमें गुफाओं में भगवान बुद्ध के जीवन को मूर्तियों के जरिए सजीव किया गया है। वैसे, इसकी चढ़ाई आपको श्रीलंका में वैष्णो देवी की याद दिलवा देगी।

**बॉटैनिकल गार्डन-** कैंडी से कोलंबो वाले रास्ते पर कैंडी से बाहर निकलते ही पीरदेनिया बॉटैनिकल गार्डन है। करीब क्ब्त्र एकड़ में फैले इस गार्डन में चार हजार से भी ज्यादा प्रजातियों के पेड़ व पौधे हैं। इसका इतिहास क्ब वीं शता□दी का बताया जाता है। यहां की बै□बू कले□शन तो गजब की है। वैसे, इसकी लेक पर बने पुल की सैर का अपना मजा है।

**एलिफेंट ऑर्फनेज-** बॉटैनिकल गार्डन से दो घंटे की ड्राइव पर और कोलंबो से न□बे किलोमीटर की दूरी पर पिन्नवला का एलिफेंट ऑर्फनेज है। वर्ष क-स्त्र्भ में बने इस ऑर्फनेज में फिलहाल एक सौ छोटे-बड़े हाथी हैं, और लोग यहां खासतौर पर हाथियों को खाना खाते व बोटल से दूध पीते देखने आते हैं। इसके बाद उन्हें पास की नदी में नहाते और शरारतें करते

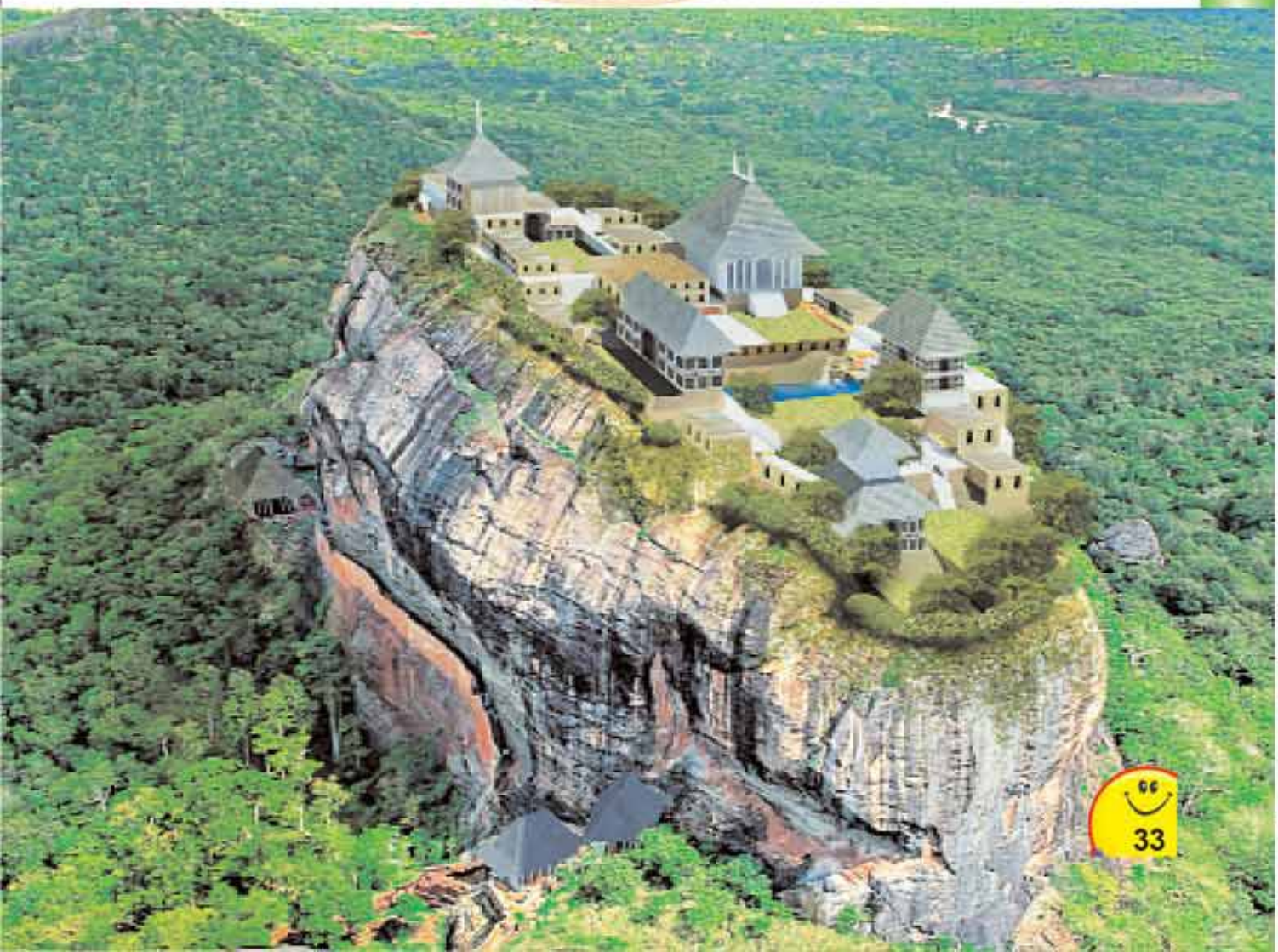

# अप्रेल फूल

कभी खुली हवा में घूमते थे
अब ए.सी. की आदत लगायी है
धूप हम से सहन नहीं होती
हर कोई देता यही दुहाई है।

लिखना-पढ़ना छोड़ दे बन्दे
नेकियों पर रख आस
चादर उठा और आराम से सो जा
भगवान करेंगे पास।

मौसम बड़ा बेहाल है
सुर है न ताल है
मैसेज बॉक्स भी कंगाल है
क्या आपकी मैसेज फैक्ट्री में भी
हड़ताल है?

कोई आंखों से बात कर लेता है
कोई आंखों में बात कर लेता है
बड़ा मुश्किल होता है जवाब देना यारो
जब कोई इंग्लिश में बात कर लेता है।

निकले जो दुनिया की भीड़
में तो ये जाना है
निकले जो दुनिया की भीड़
में तो ये जाना है
दुखी है हर वो शख्स, जिसे
आज फिर काम पर जाना है।

हम समझाते कम हैं,
समझाते ज्यादा हैं
इसलिए सुलझाते कम हैं,
उलझाते ज्यादा हैं।

सारी रात इसी कशमकश
में गुजर जाती है कि
ये रजाई में हवा कहां से
घुस रही है।

कोई तो बुक ऐसी मिलती जिस पे दिल लुटा देते
हर सब्जेक्ट ने दिमाग खाया, किसी एक को निपटा देते
अब सेलेबस देख कर ये सोचते हैं कि
एक महीना और होता तो दुनिया हिला देते।

रंगों से भरी शाम हो आपकी
चांद सितारों से ज्यादा शान हो आपकी
इस जिन्दगी में बस एक ही आरजू है हमारी
कि बंदर से ऊंची छलांग हो आपकी।

तारीफ के काबिल हम कहां
चर्चा तो आपकी चलती है
सब कुछ तो है आपके पास
बस सींग और पूंछ की कमी खलती है।

---

फोन के रिश्ते भी अजीब होते हैं
बैलेंस रखकर भी लोग गरीब होते हैं
खुद तो मैसेज करते नहीं
मुफ्त के मैसेज पढ़ने के शौकीन होते हैं।

# शायरी

जीवन में एक चीज याद रखना
आंसू पोंछने वाले बहुत मिलेंगे
पर नाक पोंछने वाला कोई नहीं मिलेगा
तो जेब में हमेशा रुमाल रखना।

खुदा के घर से कुछ गधे
फरार हो गए
कुछ तो पकड़े गए,
और कुछ हमारे यार हो गए।

फूल बिना, खुशबू बेकार
चांद बिना, चांदनी बेकार
प्यार बिना, जिन्दगी बेकार
मेरे एसएमएस बिना,
तुम्हारा मोबाइल बेकार।

हम दुआ करते हैं खुदा से
कि वो आप जैसा दोस्त और ना बनाए
एक कार्टून जैसी चीज जो हमारे पास है
कहीं वो भी कॉमन ना हो जाए।

कभी हौसला भी आजमा लेना चाहिए
बुरे वक्त में मुस्कुरा लेना चाहिए
अगर सातवें दिन भी खुजली ना मिटे तो
आठवें दिन नहा लेना चाहिए।

सोचा था हर मोड़ पे
एसएमएस करेंगे आपको
पर कमबख्त पूरी सड़क सीधी
थी, कोई मोड़ ही नहीं आया।

ए खुदा गम न देना
मेरे दोस्त को
चाहे मुझे गमों का
संसार दे दे
घूमे नई साइकिल पर
यार मेरा
मुझे चाहे पुरानी
मर्सिडीज कार दे दे।

मत छीनो बच्चों
से मोबाइल
ये अकेले रहने से
बहुत डरते हैं
ले लो एग्जाम भी
एसएमएस से ही, क्योंकि
यही है जो वो मन
लगाकर करते हैं।

हर कामयाबी पर आपका नाम हो
आपके हर कदम पर दुनिया का सलाम हो
ठंड का सामना हिम्मत से करना यार
मैं नहीं चाहता आपको सर्दी लगे या जुकाम हो।

---

हर गम को पाला नहीं जाता
कांच की चीजों को उछाला नहीं जाता
कुछ करना है तो मेहनत करो
हर बात को 'आल इज वेल' कहकर टाला नहीं जाता।

कभी-कभी मेरे दिल में खयाल आता है
कभी-कभी मेरे दिल में खयाल आता है
कि क्यों कभी-कभी मेरे दिल में खयाल आता है?

ऐसी वाणी बोलिये कि सब से झगड़ा होए
ऐसी वाणी बोलिये कि सब से झगड़ा होए
पर उस से झगड़ा ना करें जो आप से तगड़ा होए।

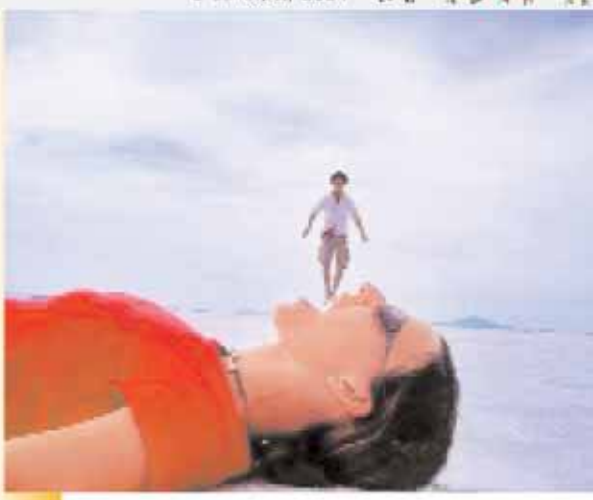

## क्रैजी किया

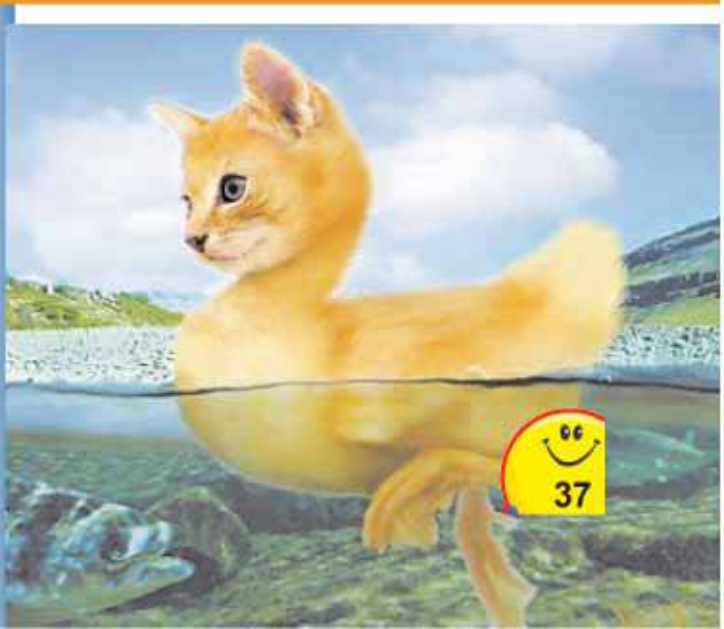

*"April 1st: This is the day upon which we are reminded of what we are on the other three-hundred and sixty-four."*

**This monkey is monkey, a monkey, good monkey, way monkey, to monkey, keep monkey, an monkey, idiot monkey, busy monkey, for monkey, 20 monkey, seconds monkey! ... Now read without the word monkey.**

Lets proof that you are not a fool

***Spell the line bellow backward***
***if you cant then you are a real fool***
***its your test,***
***Try Now***

I am a Real Stupid

**You are one of the most CUTE persons in the world!!**

Just a second, don't misunderstand.

CUTE means:
Creating
Useless
Troubles
Everywhere..

**April Fool's Day**

**So Sweet Is your Smile.**

**So Sweet Is your Style.**

**So Sweet Is your Voice.**

**So Sweet Is you Eye.**

**See How Sweetly I Lie.**

**Happy April Fool Day.!!**

*बच्चो, तु□हें रोजाना अपने घर-स्कूल में अंग्रेजी बोलना चाहिए। इससे अंग्रेजी पर अच्छी पकड़ तो बनेगी ही, साथ ही तु□हारी अंग्रेजी बोलने में होने वाली हिचकिचाहट भी दूर होगी और कॉन्फिडेंस भी बढ़ेगा। यहां तु□हें रोजाना घर-बाहर बातचीत में काम में आने वाले वा□य दिए जा रहे हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और*

क.स्कूल जाने का समय हो गया है।
It is time for school.
इट इज टाइम फॉर स्कूल।

ख. यह आपका दोष नहीं था।
It was not your fault.
इज वाज नॉट योअर फॉल्ट।

फ. बालक ने कविता सुनाई।
The boy recited a poem.
द बॉय रिसाइटिड ए पोइम।

ढ. लड़का स्कूल नहीं आया।
The boy did not come to school.
द बॉय डिड नॉट कम टु स्कूल।

भ. मु□याध्यापक ने मेरा जुर्माना माफ कर दिया।
The headmaster exempted my fine.
द हैडमास्टर इग्जै□पटेड माइ फाइन।

म. उसे अंग्रेजी में विशिष्टता प्राप्त हुई है।
He has got distinction in english.
ही हैज गॉट डिस्टिं□शन इन इंग्लिश।

ख्र. तु□हारे पास कला के विषय हैं, या विज्ञान के?
Have you offered arts or science?
हैव यू ऑफर्ड आर्ट्स ऑर साइंस?

त. मेरे पास भौतिकी, रासायनिक और जीव विज्ञान हैं।
I have offerd physics, chemistry and biology.
आई हैव ऑफर्ड फिजि□स, कैमेस्ट्रि एंड बायॉलोजी।

-. □या कोई फालतू कॉपी आपके पास है।
Do you have a spare exercise book/note book?
डू यू हैव अ स्पेअर इ□सरसाइज बुक/नोट बुक?

क. मुझे बड़ा अफसोस है, जो आपको इतनी देर तक मेरा इंतजार करना पड़ा।
I am awfully sorry to have kept you waiting so long.
आइ एम ऑफुली सॉरी टु हैव कैप्ट यू वेटिंग सो लॉंग।

## Antonyms

| | |
|---|---|
| Strong- मजबूत | Weak- कमजोर |
| Student- विद्यार्थी | Teacher- शिक्षक |
| Stupid- मूर्ख | Intelligent- बुद्धिमान |
| Succeed- सफल | Fail- असफल |

## Word-Power

- Warren- खरगोशों या खरहों के पालने का बाड़ा
- Rivalry- प्रतिद्वंद्विता
- Everlasting- चिर स्थायी
- Avoidance- आनाकानी, टालमटोल
- Manufacturers- उत्पादक, कारीगर, दस्तकार
- Weed- घास-फूस

## English-Hindi Phrases

Cancelled- रद्द किया गया।
Capable of doing- करने योग्य।
Call the quotation- कोटेशन मंगाएं/दर पता करें।
Call for an explanation- जवाब-तलब किया जाए।
Call upon to show cause- कारण बताने को कहा जाए।
Careful consideration, After- सावधानी से विचार करके।

## Synonyms

Rowdy- राउडी- गुण्डा, झगड़ालू व्य□ित।
Bully, Hooligan, Roughneck, Ruffian, Tough, Yob, Yobbo, Yobo.

(अगले अंक में जारी)

एक बार एक फिल्म के प्रोड्यूसर ने भगवान की तपस्या शुरू की। भगवान एकदम से प्रकट हो गए। प्रोड्यूसर चिढ़ के बोला- 'मैंने तो सुना था कि तपस्या करने बैठो तो पहले तपस्या भंग करने के लिए अप्सराएं आती हैं।'

एक बार मास्टर जी ने मुन्ना भाई से पूछा, 'गांधी जयंती के बारे में क्या जानते हो?' मुन्ना भाई बोले, 'गांधी जी बहुत जबरदस्त आदमी था बाप, लेकिन ये जयंती कौन है अपुन को नहीं मालूम।'

एमबीबीएस पूरी करने के बाद मुन्ना भाई ने अपने पहले मरीज का मुआयना शुरू किया। टॉर्च जला कर आंखें देखीं, कान देखे, जीभ, गला देखा और कहा, 'बोले तो, टॉर्च एकदम मस्त है बाप।'

एक बार एक पति-पत्नी खरीदारी करने गये। चार घण्टों के बाद भी पत्नी खरीदारी रोकने का नाम ही नहीं ले रही थी। पति जो बेचारा सारा सामान उठाए-उठाए साथ चल रहा था उसे बड़ा गुस्सा आ रहा था। पत्नी ने जब देखा कि पति महोदय नाराज हो रहे हैं तो थोड़ा मूड हल्का करने के लिहाज से बड़े रोमान्टिक अंदाज में कहा- 'देखिए ना चांद कितना हसीन लग रहा है।' पति चिढ़ के बोला- 'हसीन तो बहुत लग रहा है, मगर इसे खरीदने के लिए अब पैसे नहीं हैं मेरे पास।'

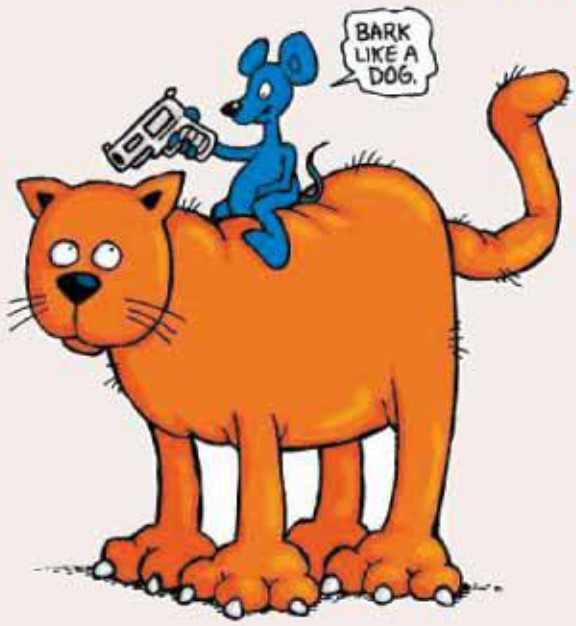


एक बार की बात है, भारत में एक गाइड किसी विदेशी पर्यटक को दिल्ली घुमा रहा था।
गाइड ने कहा- यह हमारा संसद भवन है।
विदेशी पर्यटक ने कहा, 'बस...? इतना बड़ा तो हमारे यहां पीत्जा होता है।'
गाइड चुप रहा और उसे आगे ले गया।
फिर बोला- 'यह है हमारा लाल किला।'
विदेशी पर्यटक बोला, 'बस...? इतना तो हमारे यहां बर्गर होता है।'
गाइड को गुस्सा तो बहुत आ रहा था मगर वह चुप रहा।
गाइड उसे आगे कुतुब मीनार दिखाने पहुंचा।
विदेशी पर्यटक ने पूछा- 'ये क्या है?'
गाइड बोला- 'ये तुम्हारे पीत्जा-बर्गर पर टोमेटो सास डालने की बोतल है।'

एक सज्जन एक बार मुशायरा सुनने के लिए गए। सारी शायरी सर के ऊपर से गुजर गई। वापस आए तो उनके मित्र ने पूछा- 'कैसा रहा मुशायरा?'
वे बोले- 'वैसे तो ठीक था, मगर दो लोगों को बार-बार आवाज लगती रही और अंत तक वो मंच पर आए ही नहीं!'
मित्र ने पूछा- 'कौन थे वो दो लोग?'
वे बोले- 'लोग बार बार कहते रहे, इरशाद इरशाद, मुकर्रर मुकर्रर...और दोनों ही अंत तक मंच पर नहीं आए।'

भाई, कालिदास मेघ को दूत बनाकर संदेश क्यों भेजता था? 'उसके पास मोबाइल नहीं था न?'

एक बार एक अखबार में साप्ताहिक भविष्यफल कुछ इस तरह छपा।
पहले हफ्ते- बहुत प्रगति होगी, सफलता आपके कदम चूमेगी, हर तरफ आपका नाम होगा, खुशियों से घर भर जाएगा, मान सम्मान बढ़ेगा।
दूसरे हफ्ते- थोड़ी बाधाएं हैं मगर घबराएं नहीं, समय आपके साथ है, जीत आपकी ही होगी शत्रु का नाश होगा।
तीसरे हफ्ते- कुछ लोग हैं जो आपकी प्रगति से जल रहे हैं, रोड़े अटका रहे हैं मगर वो हारेंगे आप जीतेंगे।
चौथे हफ्ते- हमारी सलाह है जरा संभल कर रहें? ऐसा लग रहा है पिछले दो-तीन हफ्तों से कोई आपको बेवकूफ बना रहा है।

भीड़ में काफी देर से खड़ा अभिनेता ऑटोग्राफ देते-देते जब थक गया तो उसने एक लड़की की नोटबुक में गधे की फोटो बना कर लड़की की ओर बढ़ा दी।
लड़की (मुस्कुराकर)- 'मुझे आपका फोटोग्राफ नहीं, ऑटोग्राफ चाहिए।'

छुट्टी के दिन तीन बच्चे बातें कर रहे थे। पहले बच्चे ने कहा- 'मेरे पापा सबसे तेज दौड़ते हैं। वह तीर चला कर दौड़ते हैं, तो तीर से पहले निशाने तक पहुंच जाते हैं।'
दूसरे ने कहा- 'यह तो कुछ भी नहीं। मेरे पापा राइफल की गोली चलाते हैं और उससे पहले टारगेट तक पहुंच जाते हैं।'
तीसरे ने कहा- 'अरे! तुम दोनों तो जानते ही नहीं कि स्पीड क्या होती है? मेरे पापा सरकारी कर्मचारी हैं। उनकी छुट्टी शाम छह बजे होती है और वे चार बजे ही घर पहुंच जाते हैं।'

एक बार की बात है। पेट्रोलियम मंत्री को एक पेट्रोल पंप का उद्घाटन करने के लिए बुलाया गया। पहले उद्घाटन की रस्म पूरी हुई। उसके बाद नाश्ते आदि का कार्यक्रम चला। मंत्रीजी ने पेट्रोल पंप के मालिक से पूछा- 'भाई, बाकी तो सब ठीक है। लेकिन यह बताएं, आपको कैसे पता चला कि इसी स्थान पर जमीन में पेट्रोल भरा हुआ है।'

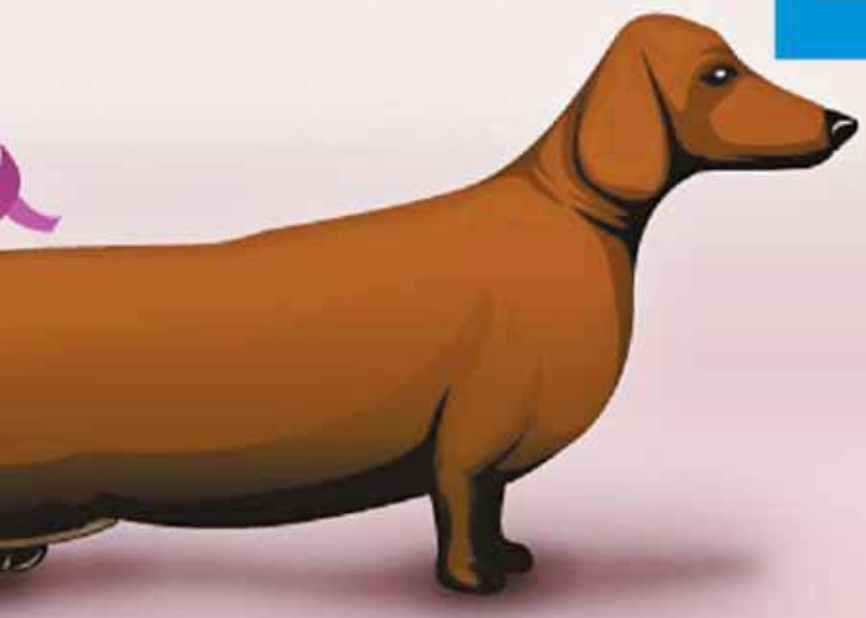

जनगणना का कार्य हो रहा था। जनगणना अधिकारी ने एक व्यक्ति से पूछा, 'आप क्या काम करते हैं?
उस व्यक्ति ने उत्तर दिया- 'मेरी एक कम्पनी है।'
'कहां?'
'वह देखो।' उस व्यक्ति ने कपड़े धोती पत्नी की और संकेत करते हुए उत्तर दिया।

# काराकोरम पर्वतमाला

**काराकोरम** एक विशाल पर्वत शृंखला है दोस्तो, जिसका विस्तार पाकिस्तान के गिलगित-बल्तिस्तान, भारत में लद्दाख और चीन के झिंजियांग क्षेत्रों तक फैला हुआ है। यह एशिया की विशाल पर्वतमालाओं में से एक है, और हिमालय पर्वतमाला का एक हिस्सा है।

काराकोरम किर्गिज भाषा का श□द है, जिसका मतलब है काली भुरभुरी मिट्टी। इसे दुनिया की छत भी कहा जाता है। विषम तापमान और विखंडित चट्टानें इस पर्वतमाला की विशेषता है।

विश्व के किसी भी स्थान के मुकाबले काराकोरम पर्वतमाला में ७ मील से भी ऊंची लगभग ८ चोटियां स्थित हैं। जिनमें दुनिया की दूसरी सबसे ऊंची चोटी के-ख भी शामिल है। के-ख की ऊंचाई विश्व के सर्वोच्च शिखर एवरेस्ट से सिर्फ ख्क्स्त्र मीटर कम है।

# सींगों वाला साकिन

**हिमालयन** आइबे□स अर्थात साकिन भारत के हिमालय प्रदेश का एक प्रसिद्ध जंगली बकरा है। भारत में यह ति□बत और भारत को विभाजित करने वाली हिमालय की पं□ित पर कश्मीर के आसपास के इलाके में पाया जाता है।

वर्ष क्त्ब्ब तक हिमालयन आइबे□स कई-कई सौ के झुंड में मिलता था। पर अब यह बहुत कम रह गया है। इस प्रकार के बकरे और देशों में भी पाए जाते हैं। परंतु उनके चार प्रकार हैं, जिनमें हिमालय की हिमालयन आइबे□स जाति एक विशेष जाति है। इसकी काले घने बालों की ख्र-८ इंच लंबी शानदार दाढ़ी होती है। अन्य देशों के बकरों की अपेक्षा हमारे देश का साकिन आकार में भी बड़ा होता है और सींग भी उसके काफी बड़े होते हैं।

साकिन की चमड़ी मोटी और चमकदार होती है, जिस कारण इसे भयंकर शीत की कोई चिंता नहीं रहती। नर के बड़े ही सुंदर और बड़े सींग होते हैं। जिनमें सामने की ओर गांठें-सी होती हैं। इसका रंग मौसम के अनुसार बदलता रहता है। गर्मी में रंग भूरा होता है। जो नीचे की ओर हल्का पीला हो जाता है। जबकि जाड़ों में यह पीलापन सफेदी लिए होता है। बूढ़े नरों की पीठ पर सफेद चक□ा हो जाते हैं। इसकी पीठ पर एक काली लकीर होती है। दाढ़ी, पूंछ और टांगें, गहरे भूरे रंग की होती हैं। शरीर का निचला भाग और टांगों के भीतर का हिस्सा सफेद होता है। मादा के पीठ के रंग में लालिमा होती है।

एक पूरे नर साकिन के कंधों की ऊंचाई लगभग ब्ब इंच तक होती है। नर साकिन के सींग ७ से ७५ इंच तक लंबे होते हैं। सींग माथे पर सीधे जाकर पीछे को मुड़ जाते हैं। मादा साकिन के सींग क्ब-क्८ इंच से अधिक लंबे नहीं होते। यह ऊंचे स्थानों पर ही मिलता है, जो हिम अंधड़ से परेशान होकर कभी-कभी नीचे उतर आता है। वसंत ऋतु में जब घास के नए कल्ले जमने लगते हैं और बर्फ पिघल जाती है। तब वह उन कल्लों को चरने आता है। साकिन की दृष्टि बहुत तेज होती है। पर घ्राण श□ित तीव्र नहीं होती। होशियार शिकारी साकिन को पीछे से किसी ऊंची चट्टान से चढ़कर मारते हैं। जब तक वे शिकारी को देख न लें तब तक बंदूक की आवाज से भागते नहीं हैं, □योंकि वे चट्टानों के टूटने की आवाज के अ□यस्त होते हैं। यदि झुंड में से कोई साकिन किसी संदिग्ध वस्तु को देखता है तो वह तेज सीटी की आवाज निकालता है और पूरी टोली भाग जाती है। एक टोली में ८-ख्र साकिन ही देखने को मिलते हैं। जाड़ों में साकिन ऊंचे स्थानों से नीचे की ओर आ जाते हैं। पर बर्फ गलते ही पुनः ऊपर चले जाते हैं। अत्यधिक शिकार की वजह से इनकी सं□या निरंतर कम होती जा रही है।

कराकोरम शृंखला का विस्तार पांच सौ किलोमीटर तक फैला हुआ है और ध्रुवीय क्षेत्रों को छोड़कर दुनिया के सबसे अधिक हिमनद इसी इलाके में हैं। ध्रुवीय क्षेत्रों से बाहर सियाचिन ग्लेशियर स□ार किलोमीटर और बिआफो ग्लेशियर म प किलोमीटर की लंबाई के साथ दुनिया के दूसरे और तीसरे सबसे लंबे हिमनद हैं।

कराकोरम पूर्वो□ार में ति□बती पठार के किनारे और उ□ार में पामीर पर्वतों से घिरा है। कराकोरम की दक्षिणी सीमा, पश्चिम से पूर्व गिलगित, सिंधु और श्योक नदियों से बनती है जो इसे पश्चिमो□ार हिमालय शृंखला के अंतिम किनारे से अलग कर दक्षिण-पश्चिम दिशा में पाकिस्तान के मैदानी इलाकों की ओर बहती है।

# सिंहमुख बंदर

**सिंहमुख** बंदर को सामान्यत: स्याह-बंदर कहते हैं। यह ख-ख इंच लंबा होता है। इसमें क-क्ष इंच की पूंछ होती है। मादा नर से छोटी होती है। पूरे शरीर पर गहरे भूरे बाल होते हैं। चेहरे के आसपास शेर के अयाल की तरह लंबे बाल एवं पूंछ के छोर पर घने लंबे बाल का गुच्छा होने से इसे इंग्लिश में 'Lion tailed Monkey' कहते हैं।

यह पश्चिम में कर्नाटक के उ□ारी भाग से केरल और कन्याकुमारी तक पाया जाता है। यह घने जंगलों में बारह से बीस के समूह में रहते हैं। इनकी आवाज मनुष्य की खांसी की आवाज से मिलती है। घने जंगलों के नष्ट होने एवं अवैध शिकार के कारण यह दुर्लभ हो चले हैं। अपने बिछुड़े साथी को बुलाने के लिए यह भारी आवाज में कबूतर की तरह गूं-गूं करते हैं। एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए ये पेड़ों से उतरकर जमीन पर चलते हुए जाते हैं। इनके नवजात शिशु सित□बर माह में अपनी माता के उदर से चिपके

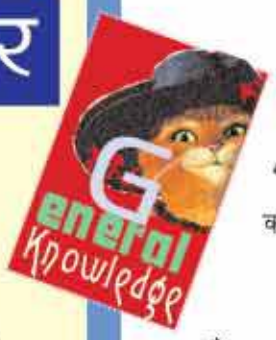


# सऊदी अरब

**वर्ष** क्क्क्त्र में ओटोमन तुर्कों ने यहां साम्राज्य स्थापित किया। वर्ष क-क्क से क-ख्त्र तक यहां ब्रिटेन का अधिकार रहा। वर्ष क-फ्ख में इ□न सौद ने हेजाज और नज्द क्षेत्रों को मिलाकर एकीकृत किया और वर्तमान स्वरूप प्रदान किया।

**आधिकारिक नाम**- मामलका अल अरबिया अस सऊदिया।

**राजधानी**- रियाद। **मुद्रा**- रियाल।

**मानक समय**- जी एम टी से फ घंटे आगे।

**भाषा**- अरबी (आधिकारिक)। **जलवायु**- मरुस्थलीय है।

**कुल जनसं□या**- ख्म्क्त्र,भ-- **क्षेत्रफल**- क-,म,भ्त्ख वर्ग किलोमीटर। **स्थिति**- मध्य पूर्व एशिया में लाल सागर और फारस की खाड़ी के तट पर स्थित है।

**मानचित्रानुसार**- आंतरिक क्षेत्र में दो मरुस्थलीय क्षेत्र 'अन नाफूद' और रब-अल-खाली स्थित है। लाल सागर का तटीय भाग पर्वतीय है।

**सर्वोच्च शिखर**- जबेल राजिक- फ,म्भ्त्त मीटर

**प्रमुख बड़े शहर**- जेद्दाह, रियाद, म□का, मदीना, तैफ।

**निर्यात**- पेट्रोलियम और इसके उत्पाद।

**आयात**- तैयार माल, परिवहन उपकरण, निर्माण सामग्री, भोज्य पदार्थ। प्रमुख व्यापार सहयोगी देश- अमरीका, ब्रिटेन, जापान, यूरोपीय देश, द. अफ्रीका। **प्रमुख उद्योग**- पेट्रोलियम उत्पाद निर्माण, प्लास्टिक व अन्य धात्विक उत्पाद निर्माण। **प्रमुख फसलें**- जौ, खजूर, फल एवं स□जयां। **प्रमुख खनिज**- तेल, प्राकृतिक गैस, बा□साइट, यूरेनियम, तांबा, जिंक। **शासन प्रणाली**- राजतंत्रीय। सुल्तान प्रमुख शा□त है, जो मंत्रिपरिषद् की सहायता से शासन करता है। **राष्ट्रीय ध्वज**- हरे व सफेद रंग पर अरबी भाषा में संदेश लिखा है।

**स्वतंत्रता दिवस**- ख्म सितंबर, क फ्ख **प्रमुख धर्म**- मुस्लिम।

**प्रमुख हवाई अड्डा**- जेद्दाह स्थित सुल्तान अ□दुल अजीज अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा।

**प्रमुख बंदरगाह**- द□माम, जुबेल, जेद्दाह, जिजान, यान्बु। **इंटरनेट कोड**- .sa

पृथ्वी पर पाए जाने वाले प्राणियों में ब्लू व्हेल सबसे बड़ी है। इसका दिल एक कार के जितना ही बड़ा होता है। इसकी जीभ एक हाथी की लंबाई जितनी लंबी होती है। इसके द्वारा निकाली जाने वाली ध्वनि सबसे तेज ध्वनि है। यह अपने फेफड़ों में एक बार में 5000 लीटर हवा को एकत्रित कर सकती है। इतना ही नहीं बड़े शरीर के बावजूद यह तीस मील प्रति घंटे की रफ्तार से तैर सकती है।

भारत विश्व का सातवां सबसे बड़ा देश है।

भारत विश्व का सबसे बड़ा चाय उत्पादक देश है।

# तथ्य निराले

हिप्पोपोटेमस यानि दरियाई घोड़े उन बहुत कम जानवरों में से एक हैं, जो पानी में बच्चों को जन्म देते हैं।

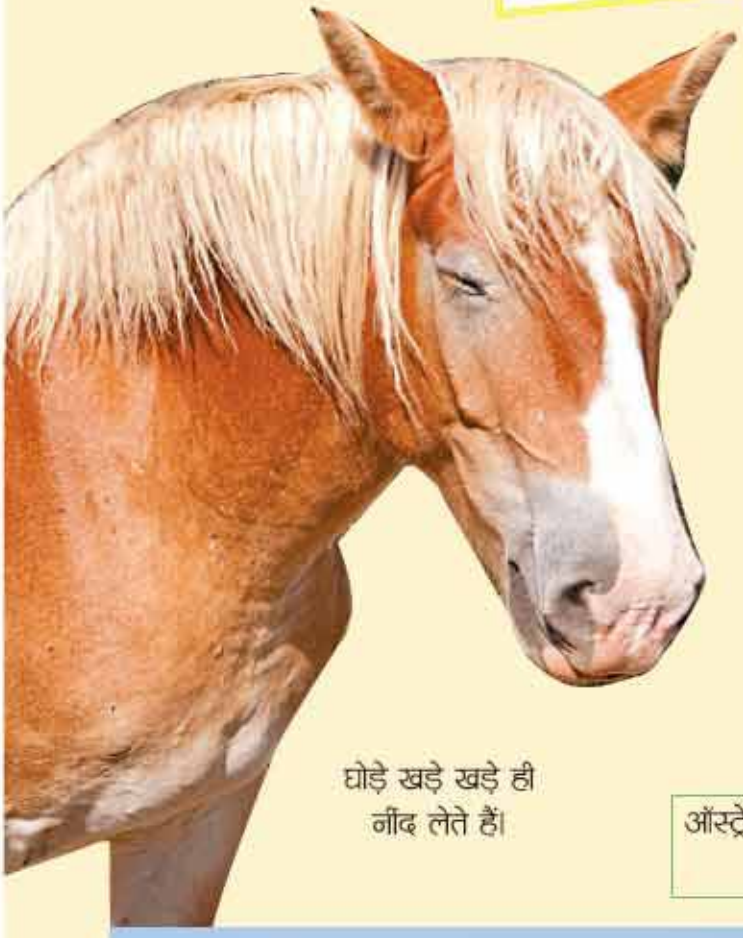

घोड़े खड़े खड़े ही नींद लेते हैं।

अमेरिका के कैलिफोर्निया शहर में हैंबेलेट स्टेट नामक एक पार्क है। इस पार्क में जैट सेकुजा वृक्ष की ऊंचाई लगभग 122 मीटर है।

ऑस्ट्रेलिया में टिनास नामक एक वृक्ष पाया जाता है, जो साल में दो बार अपनी छाल बदल लेता है।

जिराफ दुनिया का सबसे लंबा जानवर है। इसकी की लंबाई 21 इंच है।

सारी दुनिया में केवल जिराफ ही एक ऐसा प्राणी है जिसके जन्म से ही सींग होते हैं। नर-मादा दोनों के ही माथे पर हड्डी जैसे दो मूठ होती है, जो इसके सींग कहलाते हैं।

अपनी लंबी जीभ से जिराफ अपने कान भी साफ कर सकता है।

प्यारी बार्बी डॉल का नाम इसके आविष्कारक की बेटी बारबरा के नाम से आया है। सबसे पहली बार्बी डॉल जापान में बनी थी। हर दो सेकंड में दुनियाभर में दो बार्बी डॉल बेची जाती हैं। बार्बी डॉल 40 से अधिक नेशनेल्टी में उपलब्ध हैं। बार्बी 8 0 से ज्यादा रूपों में उपलब्ध हैं। पहली बार्बी एक टीनएज फैशन मॉडल थी। बार्बी डॉल की लंबाई 11.5 इंच है।

भारत की फिल्म इंडस्ट्री विश्व की सबसे बड़ी फिल्म इंडस्ट्री है। इसके बॉलीवुड नाम का इजाद बाम्बे के बी से हुआ। मुबंई भारत का सबसे बड़ा शहर है।

वर्ष 1770 में ऑस्ट्रेलिया के पूर्वी समुद्रतट जेम्स कुक ने पहली बार कदम रखे। उसने कंगारुओं का वर्णन करते हुए लिखा कि वे कुत्ते की तरह दौड़ते हैं और खरगोश की तरह कूदते हैं।

विश्व विख्यात खेल शतरंज का जन्म भारत में ही हुआ था।

जनसंख्या के मामले में यह विश्व में दूसरे नंबर पर है।

जावा (सुमात्रा) के समुद्र तट पर एक नरभक्षक वृक्ष पाया जाता है। इस वृक्ष के नीचे जो कोई भी प्राणी खड़ा हो जाता है, उसे यह अपनी खतरनाक टहनियों से ढंक लेता है। प्राणी मर जाता है, तो टहनियां अपने आप ऊपर उठ जाती हैं।

जोसेफ रिचेंडॉरफर पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने पेंसिल के टॉप पर रबर लगाने के बारे में सोचा। ताकि लिखते वक्त हुई गलतियों को आसानी से ठीक किया जा सके।

क्या आप जानते हैं कि आपकी एक पेंसिल से आप 35 मील लंबी लाइन खींच सकते हैं या अंग्रेजी के 50,000 शब्द लिख सकते हैं।

क्यों → और → कैसे?

# ऐसे बनती हैं सूइयां

सिलाई के काम आने वाली सूइयां स्टील के तार से बनती हैं, यह साधारण सी बात है। लेकिन प्रत्येक सूई अलग-अलग न बनाकर जोड़े के रूप में तैयार की जाती है। जिन्हें बाद में अलग कर लिया जाता है, यह जानकारी आपको जरूर कुछ नयी लग सकती है।

सूइयों का निर्माण करते समय इनके लिए उपयोग में आने वाले स्टील वायर को पहले इतने बड़े-बड़े भागों में काट लिया जाता है, जिनके प्रत्येक भाग से दो सूइयां तैयार की जा सकें। फिर तार के टुकड़ों के प्रत्येक सिरे को बारी-बारी ग्राइंडिंग स्टोन पर घिसकर नुकीला बनाया जाता है। अब सिरों के

नुकीला बन जाने के बाद तार के ठीक बीचों-बीच वाले भाग को ठोंका जाता है ताकि यह भाग सपाट हो जाए और यहां सूइयों के नाके (छेद) बनाये जा सकें।

इतना कार्य हो जाने के बाद एक विशेष मशीन की सहायता से सिर्फ तार के सपाट वाले भाग पर एक साथ अलग-अलग दो छेद कर दिये जाते हैं। इस तरह तार का हर टुकड़ा ऐसी जुड़वां सूइयों के रूप में तैयार हो जाता है, जिनके सिर आपस में मिले हुए होते हैं। इन सूइयों को इकाई रूप में बदलने के लिए पहले तो इन्हें दोनों नाकों के ठीक बीच से अलग करते हैं। फिर नाके वाले सिरों को घिसकर इनकी टेम्परिंग की जाती है। ये अपना काम सुगमतापूर्वक कर सकें, इसके लिए इनके ऊपर पॉलिशिंग का काम भी होता है। जिसके बाद पैकिंग करके इन्हें बाजार में भेज दिया जाता है।





# कमाल का कलाबाज

*सामग्री*– मोटे कागज की शीट, कैंची, दो छोटे सिक्के, गोंद, सेलो टेप।

*शुरू करो*– कागज की शीट को बीच में से मोड़कर इसके आधे भाग पर खूबसूरती के साथ कलाबाज का रेखाचित्र बनाने के बाद इसके बाहरी बेकार भाग को काटकर निकाल दो। जिससे तुम्हें एक ही आकार के दो कलाबाज मिल जाएं। फिर इसे रंग कर खूब आकर्षक बना डालो।

जब रंग सूख जाएं तो इन दोनों के पीछे की ओर गोंद लगाकर इन्हें

कमाल है

आपस में चिपका दो। लेकिन इससे पहले इसके दोनों हाथों के पीछे की ओर एक-एक सिक्का टेप की सहायता से चिपकाना ना भूल जाना।

जब तुम्हारा यह कलाबाज पूरी तरह सूख कर तैयार हो जाये तो तुम देखोगे कि यह अपनी नाक के सहारे अपने को कहीं भी संतुलित कर लेगा, फिर चाहे वह तुम्हारी अंगुली हो या फिर सीधा तना धागा।

*कैसे होता है ऐसा*– देखने में तो लगता है कि उल्टे लटके कलाबाज का ऊपरी टांगों वाला भाग भारी होगा। लेकिन वास्तव में हथेलियों के पीछे चिपके सिक्कों की वजह से इसका गुरुत्व केन्द्र नाक के नीचे की ओर ही रहता है, जो इसका संतुलन बनाये रखने में मदद करता है।

–आइवर

# CrossWord Puzzles

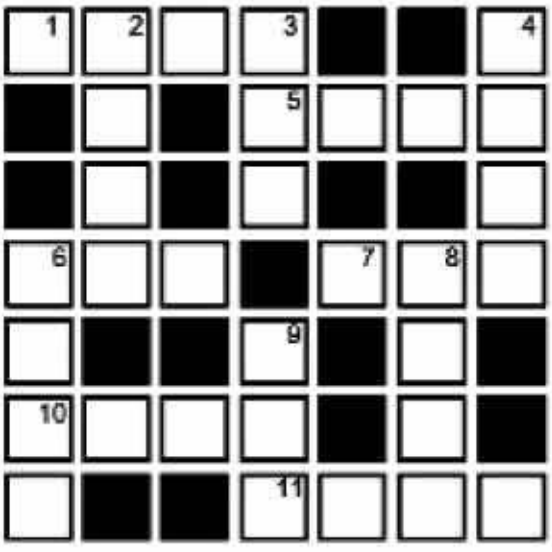

### बाएं से दाएं

क. पेट की यह थैली भोजन को पचाती है (ब)।

ध. गोंड समुदाय भारत की एक...है (ब)।

म. चोट खाये हुए को कहते हैं...(फ)।

ख्र. इसे प्रेम की देवी के रूप में जाना जाता है (फ)।

क. जो सहमत हो (ब)।

क्क. पड़ोस में रहने वाली कहलाती है (ब)।

### ऊपर से नीचे

ख. मृगनयनी के पति और ग्वालियर के शासक थे...तोमर (ब)।

फ. यज्ञ करना या हवन करना कहलाता है (फ)।

ब. हेरोडोट्स को...का जनक कहा जाता है (ब)।

म. चाल-चलन, लक्षण (ब)।

त. बॉलीवुड की एक अभिनेत्री, एक फूल का नाम (ब)।

-. वनस्पति, पेड़-पौधे को कहते हैं...(फ)।

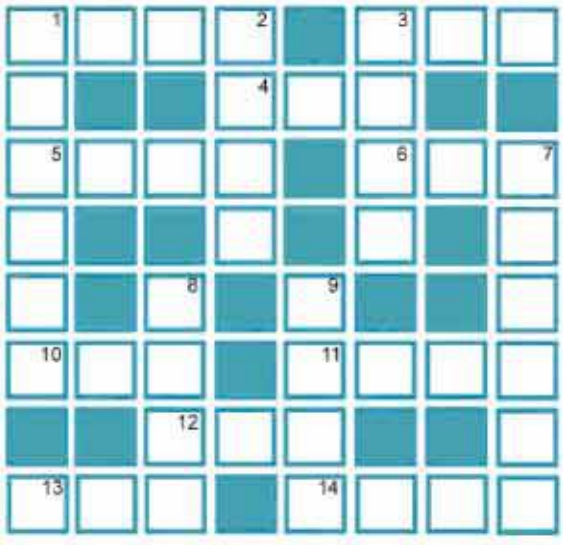

### ACROSS

1. Draft of a proposed act before parliament (4).

3. A person who tries to get secret information (3).

4. A small, mischievous devil or sprite (3).

5. Husk of grain (4).

6. Abbreviation for United Nation Organisation (3).

10. The flowing back or retiring of the tide, A decline (3).

11. A thought or suggestion as to a possible course of action (4).

12. To hang limply (3).

13. An industrious fellow, A flying insect (3).

14. A unit of reproduction, Prime cause (4).

### DOWN

1. A bladder of cohensive liquid filled with air (6).

2. A relationship between two things or situations, especially where one affects the other (4).

3. A picking goat worn on horseman's heel (4).

7. Directed or moving forward (6).

8. Having the power, skill means or opportunity to do something (4).

9. Kumar and Ramesh S.Taurani's audio cassette company(4).

Answer

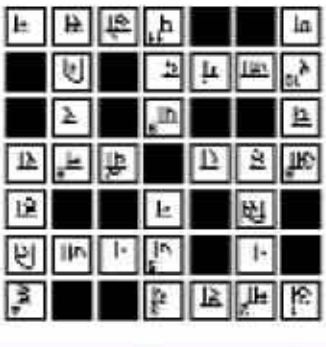

## नकलची मंकी

चंपक वन के चंपू चाचा
जैसे ताजा जड़ा तमाचा।
चेहरा उनका हरदम लाल
बालों वाली भूरी खाल।

दिनभर खों-खों करते
केले खाकर मस्ती करते।
सारी कारस्तानी उनकी
तभी तो कहलाते हैं मंकी।

नकल मारने में उस्ताद
क्या जानें अदरक का स्वाद।
बोर्ड परीक्षा में हो गये फेल
की चीटिंग व पहुंचे जेल।

–शिराली रूनवाल, ग्वालियर (म.प्र.)

मनस्वी जैन
जयपुर (राज.)

मंजू मीणा
चकेरी, सवाईमाधोपुर (राज.)

कृति मरमट
अंकलेश्वर (गुजरात)

## गुटखा खाओ, इनाम पाओ

प्रथम पुरस्कार-कैंसर
द्वितीय पुरस्कार-गले हुए गाल
तृतीय पुरस्कार- छोटा मुंह
चतुर्थ पुरस्कार- जवानी में बुढ़ापा
पंचम पुरस्कार- गुर्दा खराब
छठा पुरस्कार-खांसी, बलगम, दांत खराब
सातवां पुरस्कार-राम नाम सत्य है
फार्म मिलने का स्थान- पान की दुकान
फार्म शुल्क- 5 से 10 रुपए तक
पुरस्कार स्थल- श्मशान घाट
मुख्य अतिथि- यमराज

–शोभा रानी, भटपुरा, सुल्तानपुर (उ.प्र.)

बालमंच

## लिटिल स्टार

**लिटिल** स्टार अपने अभिनय के बूते छोटे पर्दे यानी टीवी क्षेत्र का बड़ा सितारा बनकर उभरा है। पंजाबी बेस्ड सीरियल 'परवरिश' में सन्नीजीत आहूजा की मत्त्वपूर्ण एवं कंद्रीय भूमिका को बखूबी निभाते हुए। उसने दर्शक समीक्षकों की खूब वाहवाही लूटी है। इस सीरियल में उसका अभिनय पक्ष इतना प्रबल रहा कि उसका नामांकन बारहवें इंडियन टेलीविजन अकादमी अवॉर्ड की दौड़ में मोस्ट प्रोमिसिंग चाइल्ड आर्टिस्ट के रूप में सम्मिलित किया गया। वह कहता है, 'पुरस्कार प्रतिस्पर्धा में मेरा काम मुंह से बोला। हजारों प्रशंसकों की जुबान पर मेरा नाम चढ़ा रहा। इस प्रसंग का सीधा अर्थ है कि बाल प्रतिभाएं दम-खम रखती हैं। और पहचान बनाने में सक्षम हैं। बस हमें सही मौका चाहिए होता है।'

रक्षित वाही

महाराष्ट्र के ठाणे क्षेत्र में जन्में रक्षित वाही बचपन से ही स्कूल की सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेता आ रहा है। उसके अभिनय पक्ष को पंख भी ठाणे की स्कूल में पढ़ते हुए लगे। समर कैम्प और एक्टिंग क्लासेज ने उसके इस गुण को गुनात्मक रूप से बढ़ा दिया। सीरियल डायरेक्टर इम्तियाज पंजाबी की नजर उस पर पड़ी तो उन्होंने उसे 'परवरिश' सीरियल में अवसर दिया। वह कहता है, 'सैट पर मेरे सम्मुख श्वेता तिवाड़ी सरीखी स्टार थीं। मगर मैंने आत्मविश्वास के बूते हमेशा बेहतरीन अभिनय का प्रयास किया। सभी दिग्गज कलाकारों ने पीठ थपथपायी। क्रियेटिव डायरेक्टर सोनलिका भोंसले ने लक्ष्य तक पहुंचने में बड़ा सहयोग किया।' कलर्स चैनल के लोकप्रिय सोप ओपेरा सीरियल 'ससुराल सिमर का' में भी उसे गौतम का अहम किरदार करने को मिला। 'परवरिश' की ही भांति यह धारावाहिक भी उसकी पहचान में चार-चांद लगाने वाला साबित हुआ। यहां भी वह चर्चित स्टार कास्टिंग का एक भाग बन सका। वह कहता है, 'मैंने तय कर रखा है कि मैं सदैव बड़े और मूल्यवान रोल ही करूंगा। 'ससुराल सिमर का' मेरे लिए मील का पत्थर है। मुझे इससे भी एक कदम आगे बढ़ते जाना है।' उसके दिल की मुराद पूरी भी हो चुकी है। वह 'बूगी-वूगी' वंडर किड शो में बतौर होस्ट जुड़ गया है। छह से चौदह वर्ष की बाल प्रतिभाएं इस शो के प्रतिभागी हैं। एंकर के रूप में उसकी योग्यता का ग्राफ निश्चित रूप में बढ़ रहा है। उसे फिल्म्स और मॉडलिंग के प्रस्ताव भी मिलने लगे हैं। रक्षित वाही कक्षा सात का होनहार छात्र है। वह थाणे शहर की एसबी फिर्के विद्यालय में पढ़ते हुए कभी भी अवकाश नहीं करता। उसे ड्रॉइंग का भी शौक है। बड़ा होकर वह अभिनेता ही बनना चाहता है। आमिर खान उसके पसंदीदा हीरो हैं। बाल पत्रिकाएं पढ़ना वह कभी नहीं भूलता।

–राजू कादरी रियाज

नॉलेज बैंक

अप्रेल-I, 2014

बालवंस

## शब्द युग्म

**उपल**– पत्थर
**उत्पल**– कमल

**उदार**– दानशील
**उधार**– ऋण

**उपरत**– विरत
**उपरित**– विलासी

**उदाहरण**– दृष्टान्त
**उद्धरण**– उतारना

**प्रेय**– प्रिय
**पेय**– पीने योग्य

## पर्यायवाची शब्द

**पत्र**– दल, पर्ण, पल्लव
**पाला**– हिम, नीहार, तुषार
**अनिल**– वायु, वात, समीर
**पत्नी**– गृहिणी, बहु, वधू, दारा
**प्रकाश**– आलोक, उजाला, आभा, प्रभा

दुष्टमित्र से सदा भय।
Friendship with mean fellow is always dreadful.

कहना और करना और।
Deeds are fruits words are but leaves.

कही खेल की सुनी खीलों की।
Talk of chalk and to hear cheese.

कहीं बूढे तोते भी पढ़ते हैं?
Can you teach an old woman to dance?

कमबख्ती जब आवे ऊंट चढ़ें तो कुत्ता काटे।
He who is born in misfortune stumbles as he goes.

Cater-cousin- दूर का संबंध
To catch cold- सर्दी लग जाना
To catch a glimpse- झलक पाना
To catch fire- आग लगना, जोश से भर जाना

## अंतर है

Heal- स्वस्थ होना या करना
Heel- एड़ी
Heap- ढेर, अंबार
Hip- कमर
Hear- सुनना
Here- यहां
Heroin- हेरोइन
Heroine- नायिका

## एक के तीन

Assure- अश्योर- आश्वस्त करना- आश्वासनम्
Convince- कन्विंस- विश्वास दिलाना- प्रत्यायनम्
Affiliate- एफिलिएट- संबंधित करना- संबंधनम्
Accredit- एक्रेडिट- मान्यता प्रदान करना- संप्रत्यायनम्
Recognise- रिकोग्नाइज- मान्यता देना- मान्यताप्रदानम्,

## लोकोक्तियां

**नमाज पढ़ने गये रोजे गले पड़े**– एक समस्या से मुक्ति का प्रयास करने में बड़ी समस्या से घिर जाना।

**न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी**– किसी कार्य को करने

## उर्दू/ हिन्दी

**कोल**– ताल, तालाब, तड़ाग
**कोशक**– भवन, प्रासाद, महल
**कोर**– अंधा, नेत्रहीन, अंध, नबीना
**कोशिश**– प्रयत्न, उद्यम, प्रयास, परिश्रम
**कोरची**– सैनिक, सिपाही, फौजी, लोहार

## One Word

Animal having two feet- **Biped.**
Government by one man- **Autocracy.**
One who can t pay the debts- **Bankrupt.**
State of being unmarried- **Bachelorhood.**

- जो बहुत गहरा हो– *अगाध*
- आगे आने वाला– *आगामी*
- भोजन करने की इच्छा– *जिघत्सा*
- जो क्षमा न किया जा सके– *अक्षम्य*

प्रस्तुतिः किशन शर्मा

# art junction

# माथापच्ची

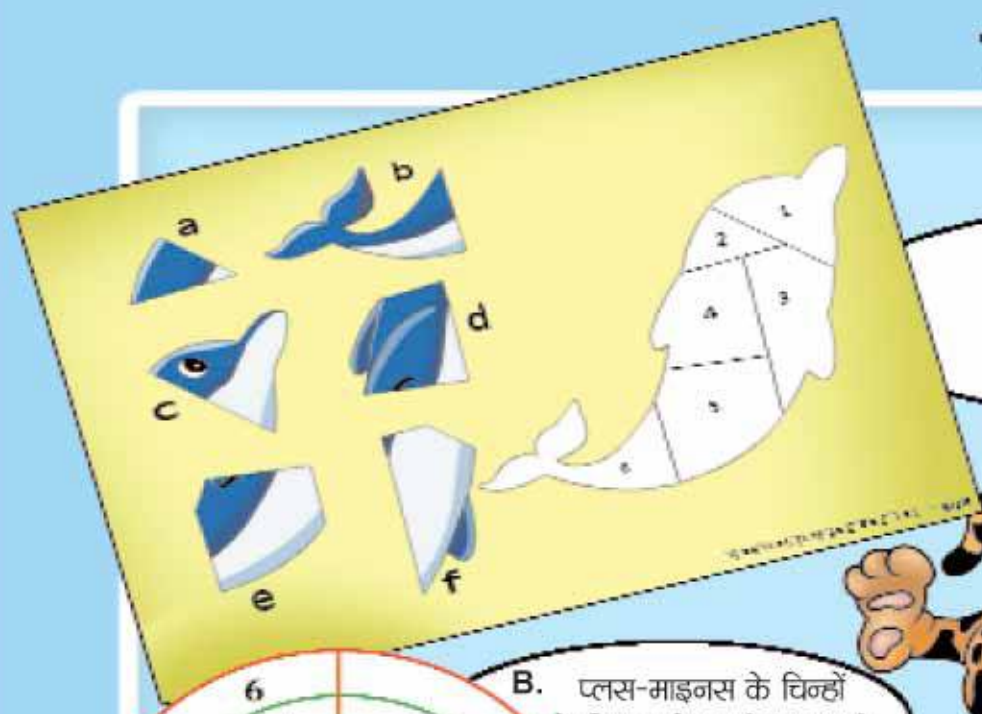


**A.** मछली का कौनसा टुकड़ा कहां आएगा?

**B.** प्लस-माइनस के चिन्हों के हिसाब से खाली स्थान की संख्या भरो।

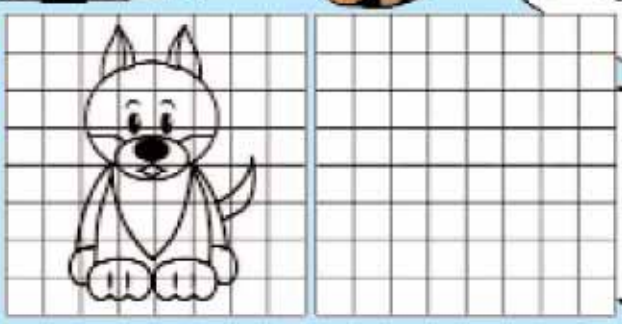

**C.** चौखाने में चित्र बनाओ

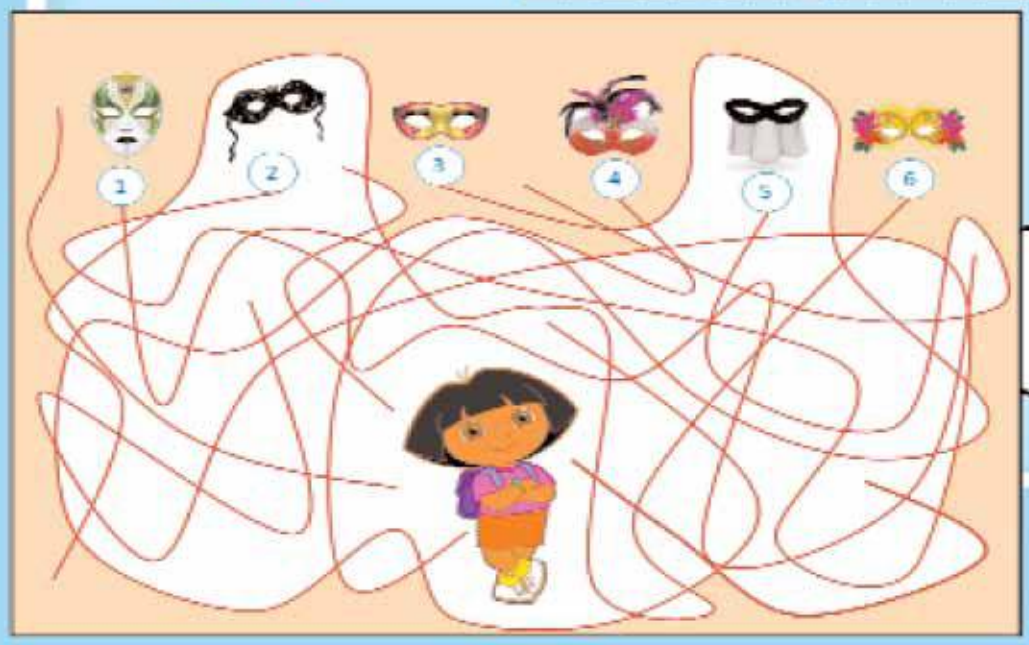


**D.** गुड़िया का चश्मा कौनसा है?

उत्तर

**D.** 3 नम्बर

**G.**

1. सूरज डूबी हो उस ओ।
2. गधड़ी के बाली में किसा बाग ओ।
3. गधड़ी की उदरे में घूरन गली ओ।
4. पोड़े जड़े गधड़े के हाथ में ठेकड़ी ओ।
5. गोंद ओढ़े गधड़ी की ठेकड़ी में धन उगाए ओ।
6. गधड़ी के पोड़े अदरोंगा अकेला ओ।
7. अंधे लाते गधड़े के पांव बिख रहे ओ।
8. दुद पर घूरन गली ओ।
9. गोंद उगे घूरन गया ओ।
10. बंधन को बाग टूटगा आगाह ओ।

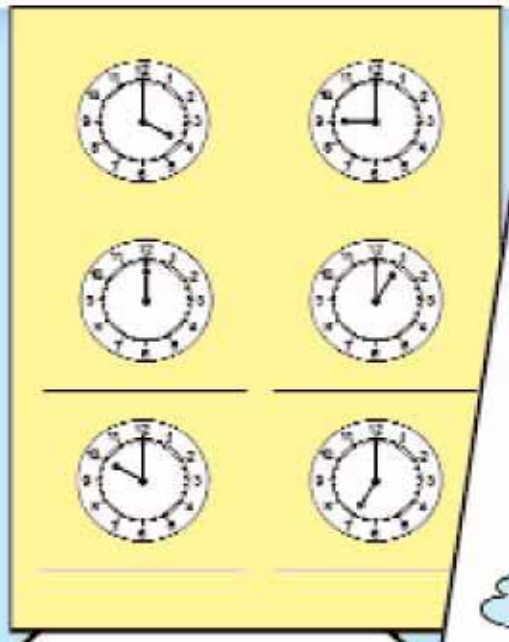

E. कौनसी घड़ी क्या बजा रही है?

F. डॉट टू डॉट

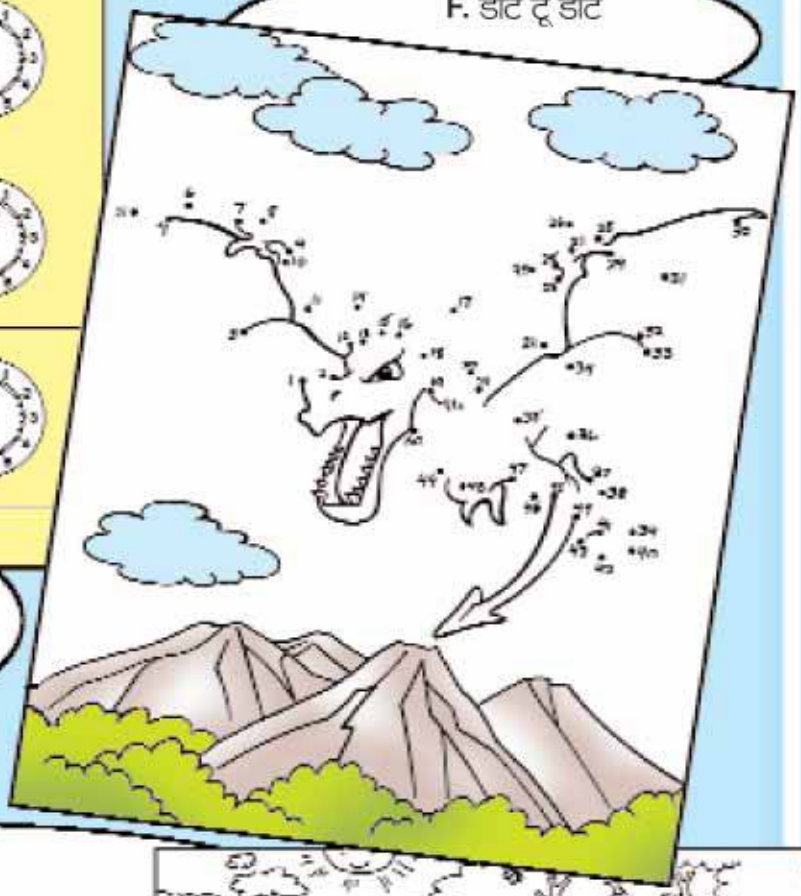

G. अंतर बताओ

H.

स्टेप बाय स्टेप सीखो चित्र बनाओ।

उत्तर

B.

# KidsClub

**विजित सिंह शेखावत**
उम्र- ८ वर्ष
स्थान-जयपुर (राजक)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

**ऋषि प्रजापति**
उम्र- ८ वर्ष
स्थान-इलाहाबाद (उ.प्र.)
रुचि-शतरंज, खेलना।

**कल्पेश जैन**
उम्र- क्प वर्ष
स्थान-अचनारा (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

**अक्षत अरोड़ा**
उम्र- क्क वर्ष
स्थान-ऋषिकेश
रुचि-पढ़ना, चित्रकारी।

**प्रिंस कुमार**
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान-परिहार (बिहार)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

**दीपक यादव**
उम्र- ९ वर्ष
स्थान-जयपुर (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

**हीरांशी जैन**
उम्र- क्क वर्ष
स्थान-अजमेर (राज.)
रुचि-पढ़ना, डांसिंग।

**देवेन्द्र सुथार**
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान-बागरा, जालोर (राज.)
रुचि- हंसना, पढ़ना।

**दिनेश जांगिड़**
उम्र- क्प वर्ष
स्थान-बाड़मेर (राज.)
रुचि-पढ़ना, पेंटिंग।

**सोनू जैन**
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान-अचनारा (राज.)
रुचि-मेहंदी, पढ़ना।

**स्नेहा सिंह**
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान-कानपुर (उ.प्र.)
रुचि-पढ़ना, सिंगिंग।

**खुशी**
उम्र- ७ वर्ष
स्थान-कालरी, चूरू (राज.)
रुचि-खेलना, घूमना।

**कुमकुम बैरवा**
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान-उदयपुर (राज.)
रुचि-पढ़ना, टी.वी.।

**देवर्ष मिश्र**
उम्र- ९ वर्ष
स्थान-कोटद्वार (उ□राखंड)
रुचि-पेंटिंग, डांसिंग।

**आदित्य शर्मा**
उम्र- क्क वर्ष
स्थान-जयपुर (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

**विकांशु मौर्य**
उम्र- क्प वर्ष
स्थान-फैजाबाद (उ.प्र.)
रुचि-पढ़ना, क्रिकेट।

**राहुल गौड़**
उम्र- त वर्ष
स्थान-जयपुर (राजक)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

**मोहित गौड़**
उम्र- म वर्ष
स्थान-जयपुर (राज.)
रुचि-खेलना, पढ़ना।

**आशीष कुमार**
उम्र- क्प वर्ष
स्थान-अमियावर (बिहार)
रुचि-पेंटिंग, क्रिकेट।

**कौशर जहां**
उम्र- क वर्ष
स्थान-कोटा (राज.)
रुचि-खेलना, पढ़ना।

**चैरी गुप्ता**
उम्र- ख वर्ष
स्थान-अबोहर (पंजाब)
रुचि-पढ़ना, पेंटिंग।

**युक्ति शर्मा**
उम्र- क वर्ष
स्थान-तिजारा, अलवर (राज.)
रुचि-खेलना, पढ़ना।

**विष्णु शर्मा**
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान-जयपुर (राज.)
रुचि-क्रिकेट, सिंगिंग।

**मो. यूनीस**
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान-गोल, सिरोही
रुचि-पढ़ना, खेलना।

**कशिश जैन**
उम्र- क वर्ष
स्थान-भरतपुर (राज.)
रुचि-पढ़ना, डांसिंग।

**नितिन कुमार**
उम्र- क वर्ष
स्थान-सराय ममरेज
(उ.प्र.)

**अंकित पटेल**
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान-सोनहुला (बिहार)
रुचि-पढ़ना, टीवी।

**प्रिंस राज**
उम्र- क्प वर्ष
स्थान-सिंधियाघाट (बिहार)
रुचि-पढ़ना, क्रिकेट।

**मो. आबिद खान**
उम्र- क्प वर्ष
स्थान-सोनभद्र (उ.प्र.)
रुचि-डांसिंग,

**अमित कुमार**
उम्र- क वर्ष
स्थान-अमियावर (बिहार)
रुचि-खेलना, पढ़ना।

**आयुष राज**
उम्र- क्क वर्ष
स्थान-अमियावर (बिहार)
रुचि-पढ़ना, क्रिकेट।

**भूपसिंह राना**
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान-बरौलीराना (राज.)
रुचि-खेलना, पढ़ना।

## क्या जानवर भी करते हैं

# आपस में बातें?

**पशु भले ही बोल पाने में अक्षम हों या फिर उन्हें आधुनिक भाषाई तकनीकों के बारे में जानकारी न हों, लेकिन संचार करने के उनके पास भी अन्य तरीके हैं। व्हेल का संगीत, गीदड़ों का चिल्लाना, मेढक की टर्र-टर्र या फिर चिड़ियों का चहचहाना, यहां तक कि मधुमक्खियों का झूमना या फिर कुत्तों की पूंछ का लगातार लहराना, ये सभी ऐसे तरीके हैं जिनके जरिये पशु अपनी बात एक-दूसरे से या फिर पशु जगत के अन्य जानवरों से साझा करते हैं।**

जीव अ□सर संचार के मौखिक या फिर अशा□दक तरीकों पर विश्वास करते हैं। जैसे पुकारने, बगैर बोले सुनने योग्य क्रियाएं करना, उदाहरण के लिए डॉलफिन की पूंछ का पानी पर झटका, जैविक चमक, खुशबू की छाप छोड़ना, रासायनिक या छूने योग्य संकेत, देखने योग्य संकेत और शारीरिक क्रियाकलापों के संकेत।

जुगनू जैविक चमक तथा मोर प्रभावशाली दृश्य उपस्थित करने के मामले में शानदार उदाहरण हैं।

बात जब सुनने योग्य संचार की होती है, तो एक जाति का हर सदस्य एक ही तरह से व्यवहार नहीं करता है। अलग-अलग क्षेत्रों के पशु अलग तरह से व्यवहार करते हैं। उदाहरण के लिए एक अध्ययन के अनुसार □लू व्हेल की न□ज, आवाज और तीव्रता इस बात पर निर्भर करती है कि वे कहां से ताल्लुक रखते हैं। कुछ पक्षियों में भी ऐसा ही व्यवहार देखने को मिलता है। ऐसे पक्षियों के बारे □या होता है, जो दो अलग-अलग क्षेत्रों की सीमा पर रहते हैं? वे अ□सर दोनों ही भाषाओं का इस्तेमाल करते हैं, इसलिए बोलने और संचार करने के लिए अपने पड़ोसी के मुताबिक उसकी भाषा का इस्तेमाल करते हैं।

जीवों के बीच होने वाले संचार की भूमिका काफी अहम है। एक अध्ययन यह दर्शाता है कि कंटीली पूंछ वाले मेडागास्कन इगुआना बोलकर संचार नहीं करते हैं, फिर भी उनके पास पूर्ण विकसित कान होते हैं। इसलिए होते हैं ताकि वे मेडागास्कन पैराडाइज □लाइकैचर की चेतावनी सुन सकें। इन दोनों जीवों के बीच सामान्य वातावरण और शिकार के अलावा कोई भी समानता नहीं है। इसलिए जब एक इगुआना अन्य पक्षियों के बीच से किसी पक्षी की चेतावनी को सुनता है तो आने वाले शिकारियों को लेकर चौंकन्ना हो जाता है। हालांकि दुनियाभर में ध्वनि प्रदूषण का बुरा प्रभाव पशुओं के संचार पर पड़ रहा है, कई पशुओं की संचार की क्षमता बुरी तरह प्रभावित हुई है। कुछ जीवों ने शोर के बीच अपनी आवाज को पहुंचाने के लिए अपने गाने के तरीकों में बदलाव किए। इससे उनकी आवाज तेज और

चींटियां रासायनिक संकेतों (इस प्रक्रिया को किमोरिसेप्शन कहते हैं) का प्रयोग चारा बटोरने की प्रक्रिया के दौरान दिशा-निर्देश जारी करने और साथियों को दुश्मनों से बचाने, नए साथियों से मिलने और हमले से बचाव जैसी गतिविधियों के

## क्या आपको पता है

- बहुत अधिक दूरी पर चल रहे झुंडों से संपर्क करने के लिए हाथी सूंड का इस्तेमाल करते हैं।
- अपनी महक छोड़ने के लिए बिल्लियां चीजों को रगड़ती हैं।
- जानवर अपने बच्चों से जुड़ने, साफ करने और उनके विकास को बढ़ावा देने के लिए उन पर जीभ फेरते हैं।
- अन्य भेड़ियों को बुलाने के लिए भेड़िए विशेष आवाज निकालते हैं।
- चींटियां एक-दूसरे का पीछा करने के लिए फेरोमोन ट्रेल्स का इस्तेमाल करते हैं।

नीचे दिये गए सवाल का सही जवाब दें, और एनीमल प्लेनेट से इनाम पाएं।

- **मेढक किस प्रकार आपस में संचार करते हैं ?**
  (A) चीख कर
  (B) पुकार कर
  (C) गुर्रा कर
  (D) टर्रा कर

Name.....

Address.....

City.....Pin.....Phone.....

Date of birth...../...../ .....

Email id.....

*एंट्री फॉर्म को पूरा भरें और इसे इस पते पर भेज दें-*

**Animal Planet- Balhans Contest**
P.O. Box No. 10534, New Delhi- 110 067

*पशुओं से जुड़ी अन्य जानकारियो ' के बारे में जानने के लिए हर शाम ८ बजे देखिए- प्लेनेट हावर। सिर्फ एनिमल प्लेनेट पर।*

पिछली बार पूछे गए सवाल – 'डांगाल टाइगर पानी को देखकर कैसा बर्ताव करते हैं?' का सही जवाब है – वे अच्छे तैराक होते हैं और कई बार पानी से मछलियां भी पकड़ लाते हैं।

**शर्तें :** कृपया प्रवेश पत्र में अपने विवरण भरें, सही जवाबों पर निशान लगाएं और ऊपर दिये गए पते पर सामान्य डाक से भेजें। इस प्रतियोगिता के छपने के दस दिन के अंदर डिस्कवरी कम्यूनिकेशन्स इंडिया (डीसीआईएन) द्वारा प्राप्त सही एंट्रियों में से विजेताओं का चुनाव किया जाएगा। यदि कई एंट्री सही निकलती हैं, तो डीसीआईएन किन्हीं पांच प्रतियोगियों को रैंडम आधार पर चुनेगा और उन्हें विजेता घोषित करेगा। विजेताओं और प्रतियोगिता के नियमों के सिलसिले में डीसीआईएन का फैसला अंतिम और बाध्य होगा। इस प्रतियोगिता से जुड़े सारे नियम जानने के लिए कृपया देखें।

www.discoverychannel.co.in/animalplanet-balhans contest

# रंग दे प्रतियोगिता परिणाम

## फरवरी द्वितीय, 2014

**क. दिव्या श्रीवास्तव,** जयपुर (राज.)
**ख. अंजली जोशी,** बीकानेर (राज.)
**फ. हिमांशी सोमरा,** चिड़ावा, झुंझुनु (राज.)
**ब. सचिन सचान,** कानपुर नगर (उ.प्र.)
**भ. अभिनव शर्मा,** जयपुर (राज.)
**म. अश्विनी कुमार,** भलुआं शंकर डिह, सारण (बिहार)
**स्त्र. प्रियंका कुमारी,** बसेडी, धौलपुर (राज.)
**त्र. कामरान निसार,** अलीगढ़ (उ.प्र.)
**–. रविन्द्र प्रकाश शर्मा,** मनोहरपुर, जयपुर (राज.)

*(विजेताओं को सौ-सौ रुपए पुरस्कारस्वरूप भेजे जा रहे हैं)*

## सराहनीय प्रयास

**क. लवी माथुर,** किशनगढ़ (राज.)
**ख. रजत शर्मा,** डीग, भरतपुर (राज.)
**फ. ओमप्रकाश गुर्जर,** बारां (राज.)
**ब. दीपिका गौड़,** अलवर (राज.)
**भ. मोनिका काला,** श्रीमाधोपुर (राज.)
**म. राशि शर्मा,** कल्याणपुर (उ.प्र.)
**स्त्र. खुशबू वर्मा,** गंगानगर (राज.)
**त्र. सपना वर्मा,** कटनी (म.प्र.)
**–. दिव्या कौशल,** कोटद्वार (उ□राखंड)
**क. गणेश शर्मा,** सहारनपुर (उ.प्र.)
**कक. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा,** वाराणसी (उ.प्र.)
**कख. देवेन्द्र राठी,** पटियाला (पंजाब)
**कफ. मनमेश शर्मा,** कोटा (राज.)
**कब. अल्पना शर्मा,** खेरली (राज.)
**कभ. श्रीश शुभम्,** लखनऊ (उ.प्र.)

## ज्ञान प्रतियोगिता- 344 का परिणाम

**क. सीतांशु चौधरी,** सुलेमसराय, इलाहाबाद
**ख. उपासना गुप्ता,** श्रीगंगानगर (राज.)
**फ. भूमिका भामावत,** उदयपुर (राज.)
**ब. संगीता शर्मा,** भ□भौरी, जयपुर (राज.)
**भ. कनक श्रीवास्तव,** उज्जैन (म.प्र.)
**म. ओमी त्रिवेदी,** लखनऊ (उ.प्र.)
**स्त्र. गोपेश किराड़,** कठूमर, अलवर (राज.)
**त्र. विजया तिवारी,** सिलीगुड़ी (पं.बंगाल)
**–. बीना छाबड़ा,** चास, बोकारा (झारखंड)
**क. आर्यन अग्रवाल,** मुज□फर नगर (उ.प्र.)

*(विजेताओं को सौ-सौ रुपए पुरस्कारस्वरूप भेजे जा रहे हैं)*

### ज्ञान प्रतियोगिता- 344 का सही हल

अरविंद केजरीवाल, नरेन्द्र मोदी, वसुंधरा राजे सिंधिया, राहुल गांधी
क. फॉमुला रेस से
ख. दिल्ली (वर्तमान में नहीं)
फ. भाजपा
ब. दीपिका पादुकोण
भ. जर्मनी

# ज्ञान प्रतियोगिता

## 347

परखो ज्ञान, पाओ इनाम

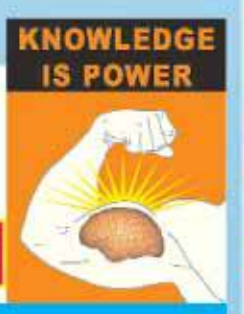


**क. हाल ही में एशिया कप क्रिकेट प्रतियोगिता किस देश में स□पन्न हुई ?**

(अ) श्रीलंका

(ब) पाकिस्तान

(स) बांग्लादेश

**ख. एशिया कप क्रिकेट प्रतियोगिता में भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान थे ?**

(अ) शिखर धवन

(ब) विराट कोहली

(स) महेन्द्र सिंह धोनी

**फ. इनमें से कौनसे देश की टीम एशिया कप क्रिकेट प्रतियोगिता में शामिल थी ?**

(अ) वेस्टइंडीज

(ब) अफगास्तिान

(स) इंगलैण्ड

**ब. मोह□मद नबी किस देश की क्रिकेट टीम के कप्तान हैं ?**

(अ) पाकिस्तान

(ब) अफगास्तिान

(स) बांग्लादेश

**भ. एशिया कप क्रिकेट प्रतियोगिता में □ुवनेश्वर कुमार सिंह किस देश के खिलाड़ी थे ?**

(अ) श्रीलंका

(ब) भारत

(स) बांग्लादेश

इन बच्चों के चेहरों को जरा पहचानिये।
चेहरे फिल्मों से जुड़ी श□सियतों के हैं।

.....

.....

.....

**ज्ञान प्रतियोगिता– 347**

नाम.....

पता.....

.....पोस्ट.....

जिला.....

राज्य.....

जीतो 1000 रुपए के नकद पुरस्कार

चयनित दस प्रविष्टियों को क- क रुपए (प्रत्येक को सौ रुपए) भेजे जाएंगे।

हमारा पता बालहंस, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राजस्थान)

# रंग दे

**1000 रुपए के पुरस्कार**

दोस्तो, इस चित्र में आपको भरने हैं, प्यारे-प्यारे रंग। चटख रंगों को भर कर, चित्र को काटकर (बालहंस कार्यालय, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर) में दिनांक 10 अप्रेल, 2014 तक भिजवाना है। अगर आपकी उम्र 15 वर्ष या इससे कम है, तभी आप इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। अपना नाम, आयु व पूरा पता साफ-साफ लिखना। सिर्फ डाक से भेजी गई प्रविष्टियां ही स्वीकार की जाएंगी। चयनित दस प्रविष्टियों को 100-100 रुपए भेजे जाएंगे।

नाम.....

पता.....

.....

.....

पोस्ट.....

जिला व राज्य.....

# ढूंढो तो...

नीचे दी गई आकृतियों को ऊपर वाले चित्र में ढूंढ़ना है। इतना करके चित्र में रंग भी तो भरो, देखो कितना मजा आता है!

# ई-मैन - 17

प्रस्तुतिः उन्नी कृष्णन किडनगूर

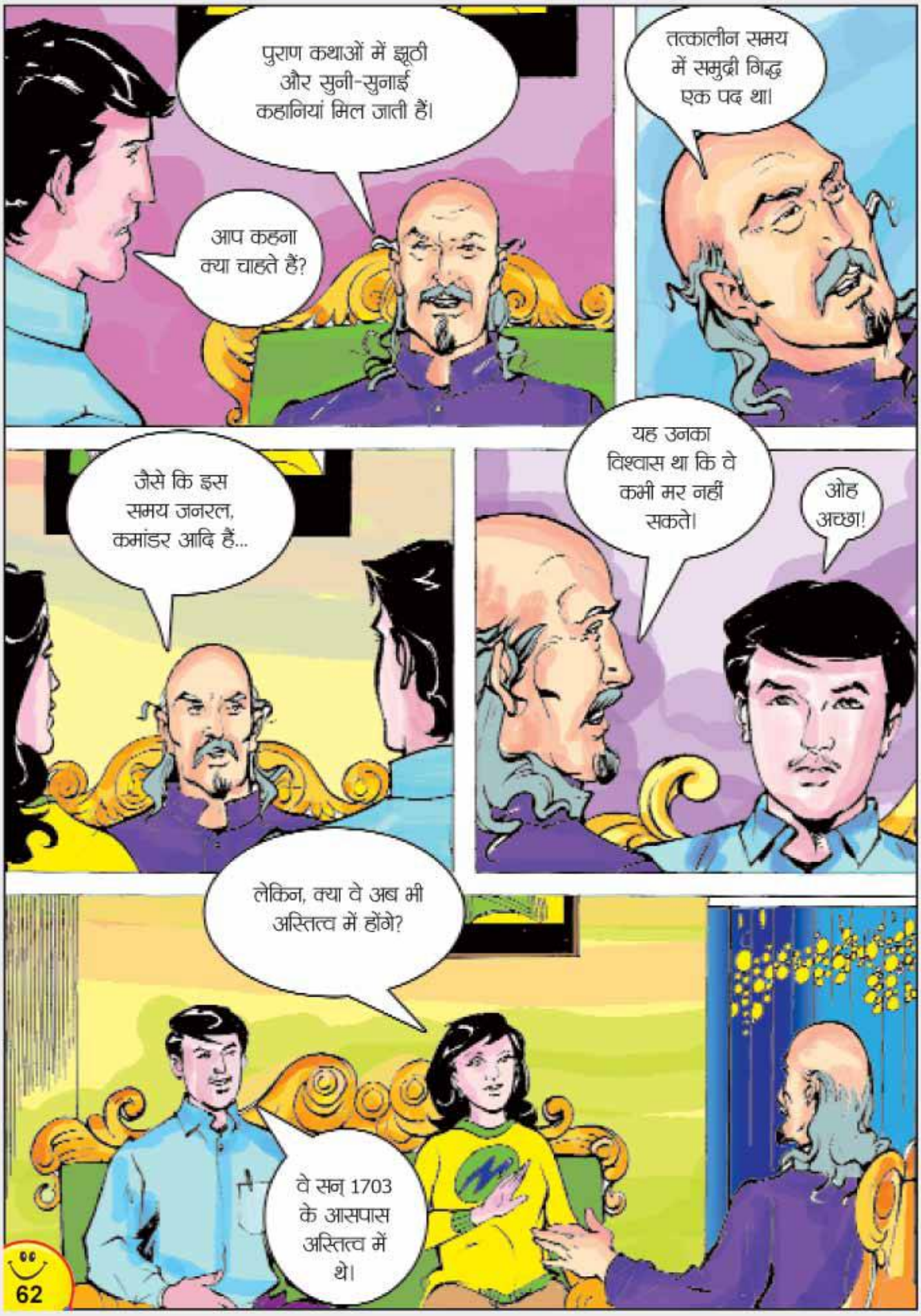

सैम्युल निक्सॉन ने समुद्री गिद्धों का तीन सौ साल पहले खात्मा कर दिया था।
हां यह सही है। लेकिन इस डायरी में लिखा हुआ है कि वे बच निकले थे।
उन्होंने ही समुद्री यात्रियों को मार कर इतिहास को रंक्तरजित किया।
आंतक और घृणा उनके खून में थी।
अभी जो समुद्र में आतंक फैला रहे हैं, वे समुद्री गिद्धों के वशंज हो सकते हैं।

बसु और मीरा साइबर विजन में...
चौधरी सही कह रहे थे।
हमें आगामी कार्यवाही के लिए रामजी को सूचना देनी चाहिए।
रामजी ने सभी बातें ध्यान से सुनीं। इसके बाद....
मामला उलझता ही जा रहा है।
हां, सर। ऐसा लगता है, इसमें नौसेना को देखल देना चाहिए।
वे दो रहस्यों को सुलझा सकते हैं।
एक तो समुद्री गिद्धों के बारे में और दूसरा रॉयंज किंग के बारे में।
हां... मैं अभी हरगोविंद से बात करता हूं।

अगले दिन...
रक्षा मंत्रालय ने रायंज किंग के गायब होने के रहस्य को सुलझाने के लिए नौसेना को इसकी जिम्मेदारी दी है।
एमस्टरडम के समुद्र की लहरों पर नौ सेना के जहाज आने लगे।
(अगले अंक में जारी)

**बालहंस** का यह अंक अच्छा लगा। कहानियां, सामान्य ज्ञान, चित्रकथाएं सहित सभी कुछ बहुत लाजवाब लगे। बच्चों से संबंधित इंटरनेट से जुड़ी साइट्स की जानकारी, विदेशी बाल कहानियां और अनमोल वचन भी दें। पृष्ठ सं□या बढ़ाएं।

**–सुखदेव सिसौदिया,**
जेरला, बाड़मेर (राज.)

बालहंस मैगजीन अमूल्य कृति है। मैं गत तीन वर्षों से इसे निरन्तर पढ़ रहा हूं। साथ ही यह मैगजीन मेरी दोनों बेटियों की पहली पसंद है। इसके अध्ययन से बेटियां ज्ञान प्राप्त कर रही हैं। कई प्रतियोगिताओं को जीत रही हैं। इसकी कहानियां प्रेरक, रोचक और ज्ञानवर्द्धक होती हैं। चुटकुले सुनने सुनाने में अच्छे लगते हैं। बालमंच, तथ्य निराले, नॉलेज बैंक रोचक और ज्ञानवर्द्धक हैं। बालहंस बच्चों के लिए ही नहीं बड़ों के लिए उपयोगी सिद्ध हो रही है। बालहंस टीम को बधाइयां।

**–महेश कुमार गौड़,** अध्यापक,
रा.मा.वि. ककरावी, अलवर (राज.)

*बालहंस बेजोड़ है*
*इसका कहीं न तोड़ है।*
*बालहंस सबकी पसंद है*
*कविता, कहानी, चित्रकथा है।*
*बालहंस हम सब पढ़ते हैं*
*ज्ञान का अर्जन हम करते हैं।*
*बालहंस है दोस्त हमारी*
*सबसे प्यारी, सबसे न्यारी।*

***–आदी जैन,***
*मंदसौर (म.प्र.)*

## इनके पत्र भी मिले

- **अरबाज खान,** धनकोली (राज.)
- **कामरान, निसार,** अलीगढ़ (उ.प्र.)
- **स्वाति वर्मा,** वाल्टरगंज (उ.प्र.)
- **पूजा नेहरा,** गोरखाना, नोहर (राज.)
- **प्रितिश कुमावत,** कपासन (राज.)
- **अनामिका स्वर्णकार,** कोटड़ी (राज.)
- **जाह्नवी भार्गव,** आसपुर, डूंगरपुर (राज.)
- **अमित कुमार शर्मा,** गुडगांव
- **राधेश्याम गुप्ता,** दरभंगा (बिहार)
- **धर्मवीर गुर्जर,** कुशलपुरा, सीकर (राज.)
- **राजेन्द्र गोयल,** सरदारपुरा, बाड़मेर (राज.)
- **नचिकेता वत्स,** लारी (बिहार)
- **सोनू नायक,** जोधपुर (राज.)
- **स□पूर्ण राज,** लखीसराय (बिहार)
- **शिवेश निगम,** कानपुर नगर (उ.प्र.)

## सब्सक्रिप्शन फॉर्म

बालहंस

ग्राहक का नाम.....

पता (जिस पते पर बालहंस चाहिए)-

नाम.....पता.....

.....

पोस्ट.....जिला.....राज्य.....

कितने समय के लिए- द्वैवार्षिक (480/-रुपए)..... वार्षिक (240/-रुपए) ..... अर्द्धवार्षिक (120/-रुपए).....

ड्राफ्ट संख्या .....मनीऑर्डर संख्या .....

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से **बालहंस, जयपुर** के नाम भिजवाएं। ड्राफ्ट के साथ इस फॉर्म को भी संलग्न कर भेज सकते हैं।

*सब्सक्रिप्शन व वितरण संबंधी पूछताछ के लिए कृपया फोन नं. 0141-3005825 पर संपर्क करें।*

**राशि इस पते पर भेजें-**

बालहंस (पाक्षिक)
वितरण विभाग
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान), पिन- 302 004

.....
**ग्राहक का पूरा नाम व हस्ताक्षर**

*नोटः बालहंस पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है। डाक अव्यवस्था के कारण अंक न मिल पाने की सूचना एक माह के भीतर दे देवें। अंक उपलब्ध होने पर ही दुबारा भेजा जाएगा। देर से भेजी गई आपत्तियां अस्वीकार होंगी।*

स्वत्वाधिकारी राजस्थान पत्रिका प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक व प्रकाशकः रघुनाथ सिंह द्वारा राजस्थान पत्रिका प्रा. लि., केसरगढ़, जे.एल.एन. मार्ग/5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं प्लाट नं. 73-74, रीको औद्योगिक क्षेत्र, झोटवाड़ा, जयपुर (राज.) से मुद्रित। आर.एन.आई. नं. 46292/86, सम्पादकः आनन्द प्रकाश जोशी

PARLE
HIDE & SEEK
Fab!
Free Toy Plane inside every pack
FREE TOY PLANE
Strawberry
Hurry!! Make your own collection of toy fighter planes while enjoying delicious, creamy choco chip cookies! Grab a pack today.
Toy Planes shown here are as per Creative Visualisation.
• OFFER VALID TILL STOCKS LAST • STOCKS ALSO AVAILABLE WITHOUT THE OFFER.